नकुल ने भी श्रीकृष्ण के सामने अपने विचार रखे। उन्होंने कहा–बड़े भाइयों ने जो अपनी बातें कहीं हैं उन्हें आप सुने ही। आप अपने विचार भी कई बार व्यक्त कर चुके हैं। अब इन बातों को पीछे छोड़कर जैसा आपको उचित जान पड़े वैसा कीजिए। विभिन्न कारण उपस्थित होने पर मनुष्यों के विचार भिन्न हो जाते हैं और समय से विचार बदलते हैं। किसी विषय में हम सोचते कुछ हैं और होता कुछ दूसरा ही है। संसार के लोग स्थिर विचार के नहीं होते हैं। जब हम वन में थे, उस समय के हमारे विचार कुछ अन्य थे, अज्ञातवास के समय हमारे विचार बदलकर कुछ और हो गये थे, अब कुछ अन्य हो गये हैं। वन में रहते समय हमारे मन में राज्य के लिए वैसा आकर्षण नहीं था जैसा कि आज है। अब आपकी कृपा से हमारे पास सात अक्षौहिणी सेना हो गयी है। आप कौरवों के बीच में पहले शांति वार्ता कीजिएगा और अंत में उन्हें कुछ भय भी दिखाइयेगा।

सहदेव ने श्रीकृष्ण से कहा–माधव! युधिष्ठिर ने जो कहा है वह सनातन धर्म है, परंतु मैं कहता हूं कि आप ऐसा करें कि युद्ध होकर ही रहे। कौरव यदि पांडवों के साथ संधि करना चाहें तो भी आप युद्ध की ही तैयारी करें। मैं भाइयों के धर्म छोड़कर युद्ध ही करना चाहता हूं। सात्यकि ने सहदेव के विचारों पर पलीता रखा और युद्ध अनिवार्य बताया। इसका समर्थन सभी योद्धाओं ने किया।

द्रौपदी ने श्रीकृष्ण से कहा–युधिष्ठिर द्वारा पांच गांव मांगे जाने पर भी दुर्योधन उसे नहीं स्वीकार रहा है। अतएव जब तक वह पांडवों का राज्य न लौटा दे, संधि न कीजिएगा। कौरवों ने मुझे कितना कष्ट दिया है, यह आप जानते हैं। यदि आप मुझ पर कृपा रखते हैं, तो कौरवों पर क्रोध कीजिए। भीम ने जो आज संधि की बात कही है वह मेरे हृदय में बाण की तरह लगी है जिससे मेरा कलेजा फटा जा रहा है। ये मेरे पति मेरे अपमान को भुलाकर धर्म और शांति की बात करते हैं। ये युद्ध न करें तो मेरे वृद्ध पिता द्रुपद और भाई धृष्टद्युम्न युद्ध करेंगे।

श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को सांत्वना देते हुए उससे कहा–द्रौपदी! तुम शीघ्र ही कौरवों की स्त्रियों को भी रोते हुए देखोगी। यदि कौरव मेरी बात नहीं मानेंगे तो वे मारे जाकर सियार–कुत्तों के भोजन होंगे और उनकी स्त्रियां सिर खोलकर रोयेंगी। तुम अपने आंसुओं को रोको। तुम शीघ्र देखोगी कि सारे शत्रु मारे गये हैं और राज्यलक्ष्मी तुम्हारे पास आ गयी है।

श्रीकृष्ण ने दूसरे दिन हस्तिनापुर के लिए प्रस्थान किया। पांडव उनको कुछ दूर तक विदा करने चले। उसी बीच में युधिष्ठिर ने अपनी माता कुंती के

लिए कहा–आप हमारी माता को हम लोगों का कुशल-समाचार बताइयेगा और उसे आश्वासन दीजिएगा। मेरी माता ने अपने विवाह से लेकर अपने श्वसुर के घर में आकर केवल नाना दुख भोगे हैं। इस समय भी वह कष्ट ही भोग रही है। कृष्ण! क्या हमारा ऐसा समय भी आयेगा कि हमारा सब दुख दूर हो जायगा, और हम अपनी माता को सुख में देख सकेंगे ? जब हम वन को जा रहे थे, तब वह पुत्र-स्नेह से दुखी होकर हमारे पीछे-पीछे दौड़ी आ रही थी, परंतु हम लोग उसे वहीं छोड़कर वन में चले गये। यह निश्चित नहीं है कि मनुष्य दुख से घबराकर मर ही जाता है। यदि माता जीवित होगी तो भी पुत्र-स्नेह-वश दुखी होगी। मेरा सबको नमस्कार कहिएगा। इसके बाद युधिष्ठिर लौट पड़े।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा–यदि शर्त के अनुसार दुर्योधन हमें आधा राज्य दे देते हैं, तो संधि कर लेना अच्छा है। इससे खून-खच्चर होने से बचाव हो जायगा। यदि दुर्योधन यह बात नहीं मानता है तो युद्ध होना ही है। इस बात का भीम आदि ने समर्थन किया।

जब सभी पांडव श्रीकृष्ण को विदाकर लौट आये, तब वे हस्तिनापुर के लिए चल पड़े। रास्ते में कुछ ऋषि-महर्षि मिले। उन्हें देखकर श्रीकृष्ण ने रथ से उतरकर उनका अभिवादन किया और उनका कुशल-मंगल जानकर "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं" पूछा। ऋषियों ने कहा–आपका मंगल हो, हम लोग कौरव-सभा में आपके विचार सुनने चल रहे हैं। अब आप चलें, हम लोग पीछे से आयेंगे (अध्याय -)।

. श्रीकृष्ण के रास्ते में शकुन-अपशकुन एवं स्वागत

इसके आगे चौरासी ( )वें अध्याय में शकुन-अपशकुन का वर्णन है। पहले अपशकुन लें–बिना बादल के आकाश में बिजली चमकती थी और गर्जन की आवाज होती थी। बिना बादल के घोर वर्षा होने लगी। सिंधु आदि नदियां जो पूर्व दिशा को बहने वाली हैं, पश्चिम की तरफ बहने लगीं। सारी दिशाएं विपरीत मालूम होने लगीं। सब तरफ आग जलने लगी, धरती डोलने लगी। जलाशय और कलश के जल छलक-छलक कर बहने लगे। सारा संसार धूल से आच्छादित हो गया। दिशाओं की सूझ नहीं होती थी। आकाश में मनुष्य की आकृति दिखने लगी और सर्वत्र कोलाहल होने लगा। दक्षिण-पश्चिम में आंधी उठी और वह हस्तिनापुर को अस्त-व्यस्त करने लगी। वृक्ष उखड़कर और टूटकर गिरने लगे। वज्रपात का भयंकर शब्द होने लगा।

अब शकुन की बात लें। जहां श्रीकृष्ण चलते थे, वहां सुखद वायु चलता था। सारे शकुन उनकी दाहिनी तरफ प्रकट होते थे। ऊपर से फूल बरसते थे और नीचे जमीन कुश–कंटक से रहित समतल हो जाती थी। रास्ते में लोग श्रीकृष्ण का अभिनंदन करते थे। रास्ते में दोनों तरफ अगहनी धान की फसल लहलहा रही थी। रास्ते में मिलने वाले गांव पशुओं के सुंदर ढंग से पालन से शोभा पा रहे थे। रास्ते में श्रीकृष्ण का जगह–जगह स्वागत होता था। अंततः श्रीकृष्ण का रथ वृकस्थल नामक स्थान में पहुंचा। संध्या हो गयी थी। वहां उन्होंने विश्राम किया। वहां पहले से निवास तथा भोजन–विश्राम का प्रबंध था। धृतराष्ट्र की आज्ञा से दुर्योधन ने रास्ते में जगह–जगह श्रीकृष्ण के स्वागत में छावनियां बनवा दी थीं (अध्याय –)।

मीमांसा

शकुन–अपशकुन केवल अंधविश्वास है। बिना बादल के न गर्जना होगी, न वर्षा और न बिजली की चमक होगी। सिंधु नदी पूर्वमुख नहीं बहती है, अपितु वह दक्षिण–पश्चिम दिशा में बहकर समुद्र में गिरती है। न पृथ्वी डोल सकती है और न जलाशय आदि का जल छलक सकता है। भूचाल आने पर क्षणिक रूप में यह हो सकता है।

किसी के ऊपर न आकाश से फूल की वर्षा हो सकती है, न अपने आप कुश–कंटक हटकर जमीन समतल हो सकती है। हां, रास्ते में लोग श्रीकृष्ण का स्वागत कर सकते हैं। अतएव यह सब काव्य है।

. धृतराष्ट्र के भ्रम का विदुर द्वारा निराकरण

धृतराष्ट्र ने श्रीकृष्ण की अगवानी करने के लिए तैयारी की। उन्हें दुःशासन के महल में ठहराने के लिए सोचा और उनको भेंट में देने के लिए विदुर के सामने लंबी लिस्ट पेश की। उन्होंने विदुर से कहा–मैं तुम्हारे सामने श्रीकृष्ण को भेंट दूंगा, वह इस प्रकार है–बाह्लीक (बलख) देश में पैदा हुए एक रंग के बलवान चार–चार घोड़ों से जुते हुए सोलह सुवर्णमय रथ, आठ मतवाले हाथी, हर हाथी के पीछे आठ–आठ सेवक, अक्षत योनि सौ सुंदर दासियां और सौ दास, पर्वतीय क्षेत्र के भेड़ों के कोमल बाल के अठारह हजार कंबल, चीन देश में पैदा हुए असंख्य मृगचर्म, मणि, रत्न, खच्चरियों से जुते रथ आदि श्रीकृष्ण को दूंगा। इतना ही नहीं, जो पशु, सेवक तथा दास–दासी दूंगा, उनके लिए

औसतन आठ गुना भोजन-सामग्री हर समय के लिए दूंगा।

दुर्योधन के अलावा मेरे सभी पुत्र श्रीकृष्ण की ठाटबाट से अगवानी करेंगे। दुःशासन का भवन अधिक सुंदर एवं सुविधाजनक है, वहीं श्रीकृष्ण को ठहराया जायगा। दुर्योधन के रत्नधन इसी महल में रखे हुए हैं। इनमें श्रीकृष्ण जो लेना चाहेंगे, उनको दिया जायगा।

विदुर ने कहा–राजन! आप महान हैं, वृद्ध हैं, और श्रीकृष्ण भेंट में सारी पृथ्वी पाने योग्य हैं; परंतु आपकी सारी बातें छल-कपटपूर्ण हैं। आपके इस दिखावा भरे व्यवहार में जो आपका असली मकसद है, वह मैं समझता हूं। बेचारे पांडव आपसे केवल पांच गांव मांगते हैं, परंतु आप उन्हें भी नहीं देना चाहते हैं। अतएव स्पष्ट है कि आप संधि नहीं चाहते हैं। आप श्रीकृष्ण को धन देकर उन्हें पांडवों से फोड़कर अपनी तरफ करना चाहते हैं। यह आपकी दुराशा मात्र है। मैं आपको सच्ची बात बताये देता हूं कि आप श्रीकृष्ण को धन देकर, किसी की निंदा करके अथवा अन्य कोई उपाय से उनको पांडवों से अलग नहीं कर सकते। इसलिए जल-भोजन तथा कुशल-मंगल के अलावा आप श्रीकृष्ण को कुछ भी समर्पित करने के भ्रम में न पड़ें। श्रीकृष्ण दोनों पक्षों के हित के लिए संधि कराने की इच्छा से आ रहे हैं; अतएव आप उनको वही उपहार दीजिए। आप पिता हैं, पांडव आपके पुत्र हैं, आप वृद्ध हैं, वे शिशु हैं। आप उनसे स्नेह कीजिए। वे आपके प्रति भक्तिभावना रखते हैं (अध्याय -)।

मीमांसा

धृतराष्ट्र की बुद्धि भ्रमपूर्ण, मोहग्रस्त तथा थाली के बेल की तरह ढुनमुन यकीन है। विदुर उनकी पिलपिलही बुद्धि अच्छी तरह जानते हैं और उनका आदर करते हुए बिना लाग-लपेट के खरी-खरी कहते हैं। परंतु धृतराष्ट्र विदुर की राय पर स्थिर होकर चल नहीं पाते हैं। उसी का परिणाम होता है कि वे सदैव संतापित रहते हैं और आगे भयंकर विनाश उन्हें देखना ही है।

. दुर्योधन की बुरी नियति, धृतराष्ट्र और भीष्म की फटकार

दुर्योधन ने धृतराष्ट्र से कहा–पिताजी! विदुर ने आपसे श्रीकृष्ण के विषय में जो कुछ कहा है वह सत्य है। उन्हें पांडव के पक्ष से फोड़ा नहीं जा सकता है। आपने जो श्रीकृष्ण को रत्न-धन देने की बात कही है, वह अनुचित है। मैं यह

नहीं कहता कि श्रीकृष्ण यह सब पाने के अधिकारी नहीं हैं, अपितु वर्तमान देश–काल के अनुसार यह योग्य नहीं है कि उनका धन से सत्कार किया जाय। इस समय तो श्रीकृष्ण यही समझेंगे कि राजा धृतराष्ट्र भय–वश मेरा विशेष सत्कार कर रहे हैं। यह क्षत्रिय का अपमान है। श्रीकृष्ण योग्य हैं, परंतु इस समय उनको कुछ भी देने की इच्छा करना उचित नहीं है। जब कलह आरंभ हो गया है, तब अतिथि सत्कार द्वारा प्रेम दिखलाने मात्र से शांति नहीं हो सकती।

भीष्म ने कहा–राजन! श्रीकृष्ण का कोई सत्कार करे अथवा न करे, इससे उनको कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है, परंतु उनके विचारों की अवहेलना नहीं करना चाहिए। श्रीकृष्ण को मध्यस्थ बनाकर आपको पांडवों से संधि कर लेना चाहिए।

दुर्योधन ने कहा–पितामह! अब इस बात की कोई संभावना नहीं रह गयी है कि मैं पांडवों के साथ जीवनपर्यंत मिलकर इस धन का उपभोग करूं। मैंने निश्चय कर लिया है कि जो पांडवों के सबसे बड़े सहारा हैं, उन कृष्ण को यहां आने पर कैद कर लूंगा। ऐसा करने पर पूरे यदुवंशी और पांडव मेरी आज्ञा के अंदर हो जायंगे। आप मुझे ऐसी सलाह दीजिए कि यह बात गुप्त रहे। मेरी योजना वे पहले जान न पावें, और उनके आते ही उन्हें कैद कर लिया जाय।

उक्त बातें सुनकर राजा धृतराष्ट्र तथा सभी मंत्री दुखी और उदास हो गये। धृतराष्ट्र ने कहा–बेटा, तुम ऐसी बात मत कहो। श्रीकृष्ण इस समय दूत बनकर आते हैं। वे हमारे प्रिय हैं, संबंधी हैं। उन्होंने कौरवों का आज तक कोई अपराध भी नहीं किया है। फिर वे कैद करने योग्य कैसे हो सकते हैं ?

भीष्म ने कहा–धृतराष्ट्र! तुम्हारा यह पुत्र काल के अधीन है। यह अपने हितैषियों की बातों की भी अवहेलना करता है। यह अनर्थ को अर्थ समझता है। तुम भी इसी की दुर्बुद्धि का पोषण करते हो। अब मैं इसकी बात भी नहीं सुनना चाहता। ऐसा कहकर भीष्म कुपित हो सभाभवन से उठकर चले गये (अध्याय)।

मीमांसा

दुर्योधन अति महत्त्वाकांक्षी है, इसलिए उसने विवेक खो दिया है। वह पांडवों के लिए घोर ईर्ष्यालु है। उनका विनाश चाहता है। परंतु वह दोमुखी बातें नहीं करता है। उसका जो कुछ है पांडवों के लिए सीधा विरोध है। धृतराष्ट्र की तरह वह दुविधा में नहीं झूलता है। इसलिए मनोविज्ञान की दृष्टि

से दुर्योधन धृतराष्ट्र की अपेक्षा ठीक है। वह अपने हठ-प्रलोभन और अज्ञान के कारण विनाश के मुख में जा रहा है, यह भी स्पष्ट है।

. श्रीकृष्ण का धृतराष्ट्र के राजभवन में स्वागत

श्रीकृष्ण प्रातः नित्य क्रिया से निवृत्त होकर वृकस्थल से हस्तिनापुर की ओर चले। हस्तिनापुर पहुंचने पर दुर्योधन के अलावा धृतराष्ट्र के सभी पुत्र और भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य आदि ने श्रीकृष्ण की अगवानी की। राजभवन में तीन ड्योढ़ियों को पार करके श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के पास पहुंचे। राजा ने खड़े होकर श्रीकृष्ण का स्वागत किया। सभी उपस्थित राजे-महाराजे उठकर श्रीकृष्ण का स्वागत किये। श्रीकृष्ण राजा धृतराष्ट्र से मिलकर भीष्म का भी आदर किये। वहां के समस्त राजाओं से भी वे मिले। फिर एक सिंहासन पर श्रीकृष्ण विराजमान हुए। इसके बाद धृतराष्ट्र के पुरोहित गो-मधुपर्क और जल लाकर श्रीकृष्ण को समर्पित किये- *"अथ गो मधुपर्कं चाप्युदकं च जनार्दने* (उद्यो. ,)।"

आतिथ्य ग्रहण कर हंसते हुए श्रीकृष्ण कौरवों के साथ बैठ गये और सबसे अपना बात-व्यवहार करते हुए उनके बीच बैठे रहे। फिर वे राजभवन से बाहर निकलकर विदुर जी के घर में गये। विदुर ने श्रीकृष्ण का सत्कार किया। उन्होंने पांडवों का कुशल पूछा। श्रीकृष्ण ने विस्तारपूर्वक उनका समाचार बताया (अध्याय)।

. श्रीकृष्ण का दुर्योधन का निमंत्रण त्यागकर विदुर के घर भोजन करना

विदुर के भवन से निकलकर श्रीकृष्ण अपनी बुआ कुंती के पास गये। कुंती कृष्ण को पास में आया देख उनके गले से लग गयीं और फूट-फूट कर रो पड़ीं। वे कुछ समय तक विलाप करती रहीं। मेरे लिए मेरे बच्चे मानो मर गये हैं और उनके लिए मैं मर गयी हूं, क्योंकि दोनों के लिए दोनों अदृश्य हैं। कुंती ने अपने पुत्रों को युद्ध के लिए उत्साहित करने के लिए कहा।

श्रीकृष्ण ने कहा-बुआ! तुम वीर-पत्नी हो और वीर-जननी हो। तुम जैसी विवेकशील नारी को सुख और दुख समान भाव से सहना चाहिए। तुम शीघ्र ही देखोगी कि तुम्हारे पुत्र शत्रुओं को मारकर भूपति हो गये हैं। कुंती ने कहा-

कृष्ण! जो कुछ पांडवों के हित में हो वह करो, किंतु सब काम नीति एवं धर्मपूर्वक हो। श्रीकृष्ण कुंती का अभिनंदन कर दुर्योधन के भवन में गये।

श्रीकृष्ण दुर्योधन के राजभवन में तीन ड्योढ़ियों को पारकर उनके कक्ष में पहुंचे। दुर्योधन अपने मंत्रियों, मित्रों तथा अनेक राजाओं के साथ सभाभवन में बैठे थे। श्रीकृष्ण के पहुंचते ही सब खड़े होकर उनका स्वागत किये। कुशल-मंगल के बाद दुर्योधन ने श्रीकृष्ण को भोजन के लिए निमंत्रित किया, परंतु श्रीकृष्ण ने उनका निमंत्रण स्वीकार नहीं किया। दुर्योधन की वाणी में पहले मिठास थी, परंतु श्रीकृष्ण द्वारा निमंत्रण अस्वीकार देने पर उसकी वाणी में रूखापन आ गया।

दुर्योधन ने कहा–जनार्दन! आपके लिए जल-भोजन, वस्त्र-शय्या जो समर्पित किया गया है उन्हें आप क्यों नहीं स्वीकारते हैं ? आप दोनों पक्ष के सहायक और हितचिंतक हैं। आप धर्म और अर्थ के ज्ञाता हैं, फिर मेरा आतिथ्य क्यों नहीं स्वीकार रहे हैं ? यह मैं जानना चाहता हूं ?

श्रीकृष्ण ने कहा–दूत अपना प्रयोजन सिद्ध होने पर ही आतिथ्य स्वीकार करते हैं। अतएव मेरा उद्देश्य सफल हो जाने पर मेरा तथा मेरे मंत्रियों का सत्कार करना। दुर्योधन ने कहा–आपको हमारे साथ ऐसा अनुचित बरताव नहीं करना चाहिए। आपका उद्देश्य सफल हो या न सफल हो, हम लोग आपका सत्कार तो करते ही हैं; किंतु हमें सफलता नहीं मिल रही है। आपके साथ न हमारा कोई वैर है और न झगड़ा है, फिर आप हमारा प्रेमपूर्वक अर्पित सत्कार क्यों नहीं ग्रहण कर रहे हैं ?

श्रीकृष्ण ने मंत्रियों सहित दुर्योधन को देखते और हंसते हुए कहा–किसी के घर का भोजन प्रेम से दिया हुआ ग्रहण किया जाता है या स्वयं आपत्ति में पड़ा हुआ होने से। आप में प्रेम नहीं है और मैं आपत्ति में पड़ा नहीं हूं। आप पांडवों से अकारण द्वेष करते हैं तो मानो मुझसे द्वेष करते हैं। आप मुझे पांडवों से अभिन्न समझें। जो द्वेष रखता है उसका अन्न नहीं खाना चाहिए और उसको खिलाना भी नहीं चाहिए। आपका अन्न दुर्भावना से दूषित है। अतएव मेरे लिए वह त्याज्य है। ऐसा कहकर श्रीकृष्ण वहां से उठकर विदुर के भवन में चले गये। उनके साथ भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, बाह्लीक तथा अन्य कौरव भी गये। विदुर के घर में श्रीकृष्ण के ठहरने पर वे सब कौरव-वंशी बोले–हम लोग रत्न-धन से संपन्न अपने घर को आपकी सेवा में समर्पित करते हैं। श्रीकृष्ण ने कहा–आप लोग अपने-अपने घर को जायं, आपके द्वारा मेरा सम्मान संपन्न हो गया।

. श्रीकृष्ण का दुर्योधन का निमंत्रण त्यागकर विदुर के घर भोजन करना

कौरवों के चले जाने पर विदुर ने श्रीकृष्ण की सेवा में समस्त मनोवांछित वस्तुएं समर्पित कीं। फिर श्रीकृष्ण ने विदुर जी के अन्न-फल ग्रहण किये।

भोजन के बाद विदुर ने श्रीकृष्ण से कहा-धृतराष्ट्र के सभी पुत्रों को यह निश्चय है कि पांडवों को कुछ नहीं देना है। हमारा सैन्य बल प्रबल है। हम पांडवों को धूल में मिला देंगे। ऐसी दशा में आप उनमें भाईचारा की भावना जगाना चाहते हैं। आप जो कुछ कहेंगे, कुछ फल नहीं होगा। जहां अच्छी और बुरी बात का एक समान परिणाम हो, वहां कुछ कहना व्यर्थ है। आपकी सारी बातें कौरवों को बहरे के लिए टेर सिद्ध होगी। दुर्योधन के पास प्रबल सैन्य बल है। इसके अलावा आप पर उसे संदेह है। इसलिए आप जो कुछ कहेंगे, उसे अच्छा नहीं लगेगा। जो विपरीत निश्चय किये बैठा हो, उससे कुछ कहना निरर्थक है।

दुर्योधन समझता है कि जुए में जीता हुआ राज्य अब हमारे ही अधिकार में रहेगा। वह तो पूरी पृथ्वी का राजा बनना चाहता है। राजाओं के सहित भूमंडल के सभी क्षत्रिय पांडवों के विरोध में कौरवों की तरफ से लड़ने के लिए इकट्ठे हुए हैं। ये सब-के-सब वही राजे-महाराजे हैं जो पहले से आपसे वैर बांधे थे और जिनका सर्वस्व आपने हरण कर लिया है। वे लोग आपके भय से धृतराष्ट्र के पुत्रों की शरण में आये हैं और कौरवों के सहयोग में वीरता दिखाने के लिए तत्पर हैं। ऐसे विरोधियों के बीच में आपका जाना मुझे अच्छा नहीं लगता है। जहां बहुसंख्यक लोग शत्रुता भाव रखकर बैठे हैं, उनके बीच आप कैसे जाना चाहते हैं ? मेरा प्रेम आपके प्रति है, इसलिए मैंने ऐसा कहा है। अब आपका विचार जैसा हो वैसा करें।

श्रीकृष्ण ने कहा-विदुर जी! जैसे माता-पिता स्नेह से हितकर राय देते हैं, वैसे आपने मुझे हितकर राय दी है। तो भी, मैं दुर्योधन की दुष्टता तथा क्षत्रिय-योद्धाओं के वैरभाव को जानकर ही यहां आया हूं। अपनी शक्ति के अनुसार उत्तम काम करते हुए उसमें सफलता न मिले तो भी उसका पुण्य तो मिलता ही है। दुर्योधन और कर्ण द्वारा अत्यंत भयंकर आपत्ति उपस्थित कर दी गयी है। सभी नरेश इन्हीं का पक्ष लेते हैं। इसलिए इस विपत्ति का प्रादुर्भाव कौरव-पक्ष में ही हुआ है। जो अपने मित्र को उसकी चोटी पकड़कर उसे बुरे कर्म से हटाने की चेष्टा करता है, उसे लोग बुरा नहीं कहते हैं। दुर्योधन और उनके मंत्रियों को मेरी हितकर बातें अवश्य मानना चाहिए। मैं कौरवों, पांडवों तथा समस्त राजाओं के हित की ही बात करूंगा। मैं तो निष्कपट भाव से दोनों पक्षों के हित की ही बात कहूंगा। इतने पर भी यदि दुर्योधन मुझ पर शंका करेंगे, तो

मुझे प्रसन्नता ही होगी, क्योंकि मैं अपने उत्तरदायित्व से उऋण हो जाऊंगा। मैं दोनों पक्षों के हित की बात करने यहां आया हूं। इसके लिए मैं पूरा प्रयत्न करूंगा। सफल न होने पर मैं निंदा का पात्र नहीं रह जाऊंगा। पांडवों के स्वार्थ में बाधा न देते हुए यदि मैं दोनों पक्षों में संधि करा सकूंगा तो यह मेरे द्वारा बहुत बड़ा कार्य हो जायगा। इससे खून–खच्चर से बचाव हो जायगा। यदि कौरव मेरी बात पर ध्यान देंगे और बात मान लेंगे तो वे मुझे शांति स्थापन के लिए आया हुआ जानकर मेरी बातों का आदर करेंगे (अध्याय –)।

. श्रीकृष्ण का कौरव–सभा में महत्त्वपूर्ण भाषण

श्रीकृष्ण का विदुर के यहां भोजन के बाद वहीं रात्रि–निवास हुआ। प्रातः दुर्योधन और शकुनि ने विदुर के घर जाकर श्रीकृष्ण से आग्रह किया कि राजा धृतराष्ट्र सभाभवन में विराजमान हैं तथा भीष्म, द्रोणाचार्य आदि और राजे–महाराजे भी विद्यमान हैं। अब सब लोग आपके आगमन की प्रतीक्षा करते हैं। श्रीकृष्ण ने दुर्योधन का मधुर शब्दों में स्वागत किया और रथ पर बैठकर सभाभवन के लिए चल दिये। साथ में विदुर भी हो लिए। सभाभवन में पहुंचने पर धृतराष्ट्र सहित सभी राजे–महाराजे खड़े होकर श्रीकृष्ण का स्वागत किये और उनको एक उच्च आसन पर विराजने का आग्रह किये।

पूरी सभा मौन थी। सबकी दृष्टि श्रीकृष्ण की तरफ थी। श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र की तरफ देखकर और उन्हें संबोधित करते हुए बोलना आरंभ किये–भरतनंदन! मैं आपसे यह निवेदन करने के लिए यहां आया हूं कि क्षत्रियों का संहार हुए बिना कौरव और पांडवों में शांति की स्थापना हो जाय। बस, इतना ही कहना है। शेष जानने योग्य सारी बातें आप जानते हैं। इस समय समस्त राजाओं में कुरुवंश अधिक प्रतापवान है। उसमें कृपा, अनुकंपा, करुणा, अहिंसा, सरलता, क्षमा और सत्य अन्य राजवंशों से अधिक विद्यमान हैं। इतने सद्‌गुण संपन्न वंश में यदि आपके रहते हुए कुछ अनुचित कार्य हो तो यह उचित नहीं है। आप ही कौरवों को सन्मार्ग दिखाने वाले हैं। आपके पुत्र दुर्योधन आदि धर्म और अर्थ का विचार छोड़कर क्रूर मनुष्यों के समान आचरण करने पर तुले हैं। ये लोभ से ऐसे ग्रस्त हैं कि अपने ही बंधुओं के साथ अनुचित बरताव करते हैं। इन्होंने धर्म–मर्यादा तोड़ दी है। इस बात को आप अच्छी तरह जानते हैं। कौरवों में इस समय अत्यंत भयंकर आपत्ति उपस्थित हो गयी है। यदि इस पर ध्यान न दिया गया तो भूमंडल के समस्त

क्षत्रियों का यह विनाश कर डालेगी। यदि आप चाह लें, तो इस विनाश को रोका जा सकता है। मैं दोनों पक्षों में शांति की स्थापना कठिन काम नहीं मानता हूं। इस समय शांति की स्थापना करना मेरे और आपके अधीन है। आप अपने पुत्रों को मर्यादित कीजिए और मैं पांडवों पर नियंत्रण रखूंगा।

आपके अनुयायियों का आपके शासन में चलकर ही कल्याण है। कौरवों द्वारा पांडवों के साथ वैर-विरोध रखने का परिणाम कोई अच्छा नहीं हो सकता। यह विचारकर आप स्वयं संधि के लिए प्रयत्नशील हों। ऐसा करने से पांडव आपके सहायक होंगे। आप पांडवों से सुरक्षित होकर धर्म और अर्थ का संपादन कीजिए। पांडवों के समान आपको दूसरा सहायक नहीं मिल सकता। जिसके पक्ष में भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण, विविंशति, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्त, बाह्लीक, सिंधुराज जयद्रथ, कलिंगराज, कंबोज-नरेश सुदक्षिण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, युयुत्सु आदि हों, उनका कौन राजा सामना कर सकता है। कौरवों-पांडवों का एक साथ संगठन होने पर आप धरती पर अजेय हो जायंगे। इस दशा में आपके समान या आपसे बड़े राजे-महाराजे भी आपसे समझौता कर लेंगे। ऐसी स्थिति में आप परिवार सहित सुख से जीवन बिता सकते हैं। यदि आप पहले की तरह पांडवों को अपने साथ मिलाकर रखेंगे तो आपके लिए ही यह मंगलकर होगा। युद्ध छिड़ने पर तो महान संहार ही दिखायी देता है। दोनों पक्षों का विनाश होने में आपको कौन लाभ दिखायी देता है ? पांडव मारे जायं अथवा आपके पुत्र, इससे आपको कौन-सा सुख मिलेगा ? दोनों पक्ष के लोग अस्त्र-शस्त्र में निपुण एवं वीर हैं। आप इन्हें महान भय से बचाइये।

जब मैं युद्ध के परिणाम पर विचारता हूं, तब कौरवों और पांडवों, दोनों का ही विनाश देखता हूं। ये समस्त राजे-महाराजे क्रोध में उतावले होकर प्रजा का नाश करेंगे। नरेश! आप इन सबकी रक्षा कीजिए। इन्हें विनाश से बचाइए। आपके व्यवस्थित हो जाने पर सबका बचाव हो जायगा। आप ऐसा प्रयास कीजिए कि ये इकट्ठे हुए राजे-महाराजे परस्पर मिलकर और खा-पीकर, उत्तम वस्त्र और फूल मालाएं पहनकर क्रोध और वैर को मन से निकालकर यहां से सत्कारपूर्वक विदा हों।

राजन! आप वृद्ध हैं। इस आयु में भी आपका स्नेह पांडवों के लिए पहले जैसा ही होना चाहिए। पांडव अपने पिता का स्नेह न पा सके, क्योंकि पांडु स्वर्गवासी हो गये थे। राजन! आप ही ने पांडवों को पाल-पोषकर बड़ा किया है। अतएव उनका अपने पुत्रों के सहित न्यायपूर्वक पालन कीजिए। आप

पांडवों की सदा रक्षा करें और विपत्तिकाल में तो उनकी रक्षा करना आपका कर्तव्य ही है। पांडवों ने आपको प्रणाम कहा है और निवेदन किया है–"तात! आपकी आज्ञा से हमने अपने साथियों के सहित भारी दुख सहा है। बारह वर्ष वनवास तथा एक वर्ष अज्ञातवास में काटा है। आप हमारे बड़े पिता हैं। आप अपनी प्रतिज्ञा पर ध्यान रखेंगे और हमारा राज्य हमें लौटा देंगे। आप हमारे ऊपर अनुग्रह कीजिएगा।"

राजन! जहां सभासदों के देखते-देखते सत्य का गला घोंटा जा रहा हो, वहां सभासद मरे हुए हैं। पांडव धर्म में स्थित हैं। इसलिए वे चुपचाप आपकी बाट जोह रहे हैं कि शर्त के अनुसार हमारे पिताजी हमारा राज्य लौटायेंगे। अतएव उनका राज्य उन्हें लौटा देना आपका परम कर्तव्य है। पांडवों का राज्य उन्हें लौटा देने की बात मैं कहता हूं। इसके अलावा तो मैं और कुछ नहीं कह रहा हूं। और बात कहने की है भी नहीं। इस सभा में जितने राजे-महाराजे बैठे हैं, वे धर्म और अर्थ पर विचार करके स्वयं बतावें कि मैं ठीक कहता हूं कि अनुचित कहता हूं। राजन! शांत हो जाइए! क्रोध के वशवर्ती न हों। पांडवों का राज्य देकर आप अपने पुत्रों के सहित अपने राज्य में सुख से जीवन बिताइये। आप जानते हैं कि युधिष्ठिर सदैव धर्म में स्थित हैं। उनका आपके साथ जो बरताव है वह भी आप जानते हैं। आप लोगों ने उन्हें लाक्षागृह में जलवाने का प्रयत्न किया, तथा छल करके राज्य एवं देश से निकाल दिया, तो भी वे पुनः आपकी ही शरण में आये हैं।

राजन! पुत्रों सहित आपने ही युधिष्ठिर को यहां (हस्तिनापुर) से निकालकर इंद्रप्रस्थ का निवासी बनाया। उन्होंने वहां रहकर समस्त राजाओं को अपने वश में करके उन्हें आपकी शरण में झुकाया। युधिष्ठिर ने कभी आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। ऐसे साधु स्वभाव के युधिष्ठिर को सुबल-पुत्र शकुनि ने जुआ के बहाने अपना कपट-जाल फैलाकर उनके सब कुछ का हरण कर लिया। उस दयनीय अवस्था में भी भाइयों सहित युधिष्ठिर ने सभा में अपमानित द्रौपदी को देखते हुए भी चुपचाप सब सह लिया।

मैं आपका और पांडवों का भी कल्याण चाहता हूं। राजन! प्रजा को धर्म और अर्थ से वंचित न कीजिए। इस समय आप अनर्थ को अर्थ और अर्थ को अनर्थ मान रहे हैं। प्रजानाथ! आप पुत्र-लोभ में अत्यंत आसक्त हैं। उन्हें अपने वश में कीजिए। पांडव आपकी सेवा के लिए तैयार हैं और युद्ध के लिए भी। आप जो अधिक कल्याणकारी समझें, उसी का अनुसरण करें।

सभी राजाओं ने श्रीकृष्ण के भाषण-विषय का आदर किया। इसके उत्तर में किसी ने कुछ कहने के लिए आगे आने का विचार नहीं किया (अध्याय -)।

मीमांसा

श्रीकृष्ण महाराज का भाषण उत्तम है, सीख उत्तम है। श्रीकृष्ण का भाषण पंचानबे ( )वें अध्याय में होता है। उसके बाद धृतराष्ट्र श्रीकृष्ण से अनुरोध करते हैं कि आपकी सीख सर्वोत्तम है। परंतु मेरा पुत्र दुर्योधन मेरे वश में नहीं है। उसे आप ही समझा-बुझाकर रास्ते पर लाने की कृपा कीजिए और यह विषय एक सौ चौबीस ( ) वें अध्याय में पड़ता है। बीच में छानबे ( )वें से एक सौ तेईस ( )वें-अट्ठाइस ( ) अध्यायों तथा साढ़े छह सौ से अधिक श्लोकों तक अन्य कथाओं का जोड़ भागवतों की कृपा के फल में उपस्थित हुआ है। उन कल्पित कथाओं में यही बताया गया है कि अहंकार के कारण अमुक-अमुक का पतन हुआ। उन कथाओं में दंबोद्भव राजा, परशुराम, नर-नारायण, मातलि, नारद, गरुड, इंद्र, विष्णु, विश्वामित्र, मालव, ययाति, हर्यश्व, दिवोदास आदि को जोड़ा गया है। (अध्याय -)।

. धृतराष्ट्र के आग्रह से श्रीकृष्ण का दुर्योधन को समझाना

श्रीकृष्ण ने दुर्योधन से कहा-कुरुश्रेष्ठ दुर्योधन! मेरी बात सुनो। मैं पूरे वंश के कल्याण के लिए कह रहा हूं। तुम महापुरुषों के कुल में उत्पन्न हुए हो। तुम स्वयं शास्त्रज्ञान और सद्व्यवहार से संपन्न हो। तुम्हारे में उत्तम गुण विद्यमान हैं, अतएव तुम्हें मेरी बातें मानना चाहिए। संसार में सत्पुरुषों का व्यवहार धर्म और अर्थ युक्त देखा जाता है। इस समय जो तुम्हारा दुराग्रह है, वह अधर्ममय है। यह तुम्हारा हठ प्राणनाशक और अनिष्टकर है। तुम अपना दुराग्रह छोड़ दो तो तुम्हारा तथा पूरे कुल का कल्याण है। तुम पांडवों से मेल-मिलाप कर लो। यही बात राजा धृतराष्ट्र को भी हितकर जान पड़ती है। पितामह भीष्म, द्रोणाचार्य, विदुर, कृपाचार्य, सोमदत्त, बाह्लीक, अश्वत्थामा, विकर्ण, संजय, विविंशति तथा अन्य मंत्री एवं कुटुंबीजन भी संधि में ही कल्याण देखते हैं। अपने कुल का विनाश करके क्या पाओगे ? अपने घर में आयी हुई लक्ष्मी का अपमान न करो। पांडवों को उनका राज्य देकर स्वयं विशाल राज्य का उपभोग करो।

इसके बाद भीष्म, द्रोण, विदुर आदि ने पुनः दुर्योधन को समझाया, किंतु दुर्योधन अपने हठ पर अड़ा रहा। उसने श्रीकृष्ण से कहा–आप बिना सोचे-विचारे मुझे ही दोषी बताते हैं। पिताजी, पितामह भीष्म, विदुर मुझसे वैर बांध लिए हैं; परंतु विचारने पर मेरे में रत्तीमात्र भी दोष नहीं दिखता है। युधिष्ठिर स्वयं जुआ-प्रेमी हैं। वे जुआ में सब कुछ हारकर वन गये, तो इसमें मेरा क्या दोष है ? पांडव शत्रुओं के साथ मिलकर मेरा विरोध करते हैं। मैं किसी की घुड़की से डरने वाला नहीं हूं। क्षत्रिय का अपना धर्म है युद्ध। युद्ध में यदि मारे जायं तो कोई हर्ज नहीं है। केशव! मैं अपने जीते जी पांडवों को सुई के अग्र भाग बराबर भी जमीन नहीं दूंगा।

श्रीकृष्ण ने इसके बाद दुर्योधन को फटकारा है। इस बीच दुःशासन ने दुर्योधन से कहा–"मालूम होता है कि यदि आप अपनी इच्छा से पांडवों से संधि नहीं कर लेंगे तो पितामह भीष्म, द्रोणाचार्य और पिता धृतराष्ट्र आपको, मुझे और कर्ण को बांधकर युधिष्ठिर के हाथों में दे देंगे।" दुःशासन की उक्त बातें सुनकर दुर्योधन अत्यंत क्रोध में भरकर तथा सभा छोड़कर चल दिया। फिर उसके भाई, मंत्री तथा सहयोगी नरेश भी उसके पीछे चल दिये।

श्रीकृष्ण ने दुर्योधन के उठ जाने पर ठीक यही बात कही। उन्होंने भीष्म आदि से कहा कि आप लोग दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण तथा शकुनि को बंदी बनाकर युधिष्ठिर को दे दें और पांडवों से संधि कर लें।

धृतराष्ट्र हड़बड़ा उठे। उन्होंने तुरंत विदुर द्वारा गांधारी को बुलाया और दुर्योधन को सामने रखकर उसे समझाने को कहा। गांधारी ने समझाया, किंतु फल तो कुछ होना नहीं था। दुर्योधन ने माता गांधारी की बात की उपेक्षा करके शकुनि, कर्ण, दुःशासन से सलाह कर श्रीकृष्ण को ही कैद कर लेने का षड्यंत्र कर डाला। सात्यकि दुर्योधन की चाल को समझ गये। उन्होंने कृतवर्मा से कहा कि तुम स्वयं अपनी सेना को लेकर तथा व्यूह बनाकर सभाभवन के द्वार पर डट पड़ो और मैं श्रीकृष्ण को इस षड्यंत्र से सावधान किये देता हूं। सात्यकि ने सभाभवन में जाकर श्रीकृष्ण को यह सब बताया और धृतराष्ट्र तथा विदुर को भी बता दिया।

श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र से कहा–कौरव यदि मुझे बंदी बनाना चाहते हैं तो आप इन्हें इसके लिए आज्ञा दे दीजिए; फिर देखिये कि ये मुझे बंदी बनाते हैं कि मैं इन्हें बंदी बनाता हूं। परंतु मैं स्वयं यह निंदित काम नहीं करूंगा। धृतराष्ट्र ने पुनः दुर्योधन को बुलाया। उसके साथ कर्ण, दुःशासन आदि भी थे। धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को पुनः समझाया और फटकारा। विदुर ने भी पुनः समझाने की चेष्टा की। परिणाम तो कुछ होना नहीं था।

इसके बाद एक सौ एकतीस ( )वें अध्याय के बारह श्लोकों में श्रीकृष्ण के विश्वरूप दर्शन की बात लेखक ने लिख डाली है। श्रीकृष्ण अपने शरीर में विश्वरूप दर्शन कराकर अपनी बुआ कुंती से मिलने चले गये। उनके चलते-चलते उनके सामने धृतराष्ट्र ने अपने मन को पांडवों के प्रति शुद्ध होने की सफाई दी, और कहा कि आप देख ही रहे हैं कि मेरे पुत्र मेरी बात कितनी मानते हैं। अब आप मेरे ऊपर संदेह न कीजिएगा (अध्याय -)

मीमांसा

श्रीकृष्ण के प्रति जब भक्तिभावना बढ़ गयी, तब उनको विश्वनियंता मान लिया गया, फिर उनके प्रति सारी अलौकिकता का जुड़ना सरल हो गया, जो धार्मिक कहलाने वालों का रोग है। सारी चमत्कारी बातें असत्य, मनगढ़ंत और मिथ्या होती हैं; वह चाहे दुनिया के किसी भी महापुरुष के प्रति गढ़ी गयी हों।

. कुंती का श्रीकृष्ण द्वारा अपने पुत्रों के लिए संदेश

श्रीकृष्ण अपनी बुआ कुंती से मिलने उनके पास पहुंचे और उनसे कहा–बुआजी! अब मैं शीघ्र ही पांडवों के पास पहुंचना चाहता हूं। आपको उनके लिए जो संदेश हो वह बताओ। कुंती ने कहा–बेटा! तुम अपना समय यहां व्यर्थ न खोओ, जाकर अपना काम करो। जैसे तोतारटंत वेदपाठियों का बिना उसका अर्थ जाने पाठ करते-करते समय नष्ट होता है; वैसे तुम्हारी बुद्धि कौरवों-पांडवों के मेल-मिलाप के चक्कर में इस समय लगी हुई, व्यर्थ समय जाता है। मेरे बच्चे क्षत्रिय हैं। वे युद्ध के लिए पैदा किये गये हैं। वे अन्याय करने वालों से युद्ध करके अपना अधिकार प्राप्त करें।

एक पुरानी घटना है । विदुला नाम की एक क्षत्राणी थी। उसका पुत्र सिंधु-नरेश से पराजित होकर अपने राजभवन में हतप्रभ होकर सो रहा था। विदुला ने उसे डांटा और उसके क्षात्रधर्म की याद दिलायी। उसने पुत्र से कहा–बेटा! तू धैर्य रखकर स्वाभिमान का अवलंबन कर और अपने वंश की कीर्ति का उद्धार कर। फिर विदुला के उपदेश से उसका पुत्र उत्साह में उठ खड़ा हुआ और उसने सफलता पायी।

कुंती ने कृष्ण से कहा–जाकर मेरे बेटों को कह दो कि वे कायर न बनें, अपने क्षात्रधर्म की याद करें। इन आततायी कौरवों से बलपूर्वक अपना अधिकार प्राप्त करें। कृष्ण! तुम स्वयं सब कुछ जानते हो, मेरे बेटों की रक्षा

करना। जनार्दन! तुम मेरी ओर से द्रौपदी और पुत्रों सहित पांडवों से कुशल-मंगल पूछना और यह बताना कि कुंती कुशल से है।

इसके बाद श्रीकृष्ण ने कुंती का प्रणाम करके उनकी परिक्रमा की और तुरंत पांडवों के पास पहुंचने के लिए निकल पड़े। वे तीव्र घोड़ों के रथ पर शीघ्र उपप्लव्य नगर में पहुंच गये, जहां पांडव विद्यमान थे। (अध्याय -)।

. श्रीकृष्ण और कुंती का कर्ण को अपने पक्ष में लाने का प्रयास

इसके बाद भीष्म और द्रोणाचार्य दुर्योधन को पुनः समझाते हैं कि पांडवों से मेल-मिलाप करके आनंद से रहो। तुम पांडवों के पास जाओगे तो युधिष्ठिर तुम्हें गले से लगा लेंगे। परंतु उस पर किसी की सीख लगने वाली नहीं थी। श्रीकृष्ण तो एक सौ सैंतीस ( )वें अध्याय में ही उपप्लव्य नगर को चले गये हैं; परंतु एक सौ चालीस ( )वें अध्याय में श्रीकृष्ण कर्ण को समझाते हैं जो हस्तिनापुर में ही संभव है। खैर, श्रीकृष्ण ने कर्ण से कहा–तुम कुंती के ज्येष्ठ पुत्र हो। पुत्र की माता का जिससे विवाह होता है शास्त्रों ने उसी को उसका पिता बताया है। तुम कुंती की कन्या अवस्था में उत्पन्न पुत्र हो, इसलिए तुम्हारे पिता पांडु ही हैं। पांडु भरतवंशी हैं और तुम्हारी माता वृष्णिवंशी हैं। अतएव तुम्हारे सहायक पांडव और यादव दोनों हैं। तुम मेरे साथ पांडवों के पास चलो और उन्हें पता लग जाय कि तुम उनके बड़े भाई हो तो पांचों पांडव, द्रौपदी के पांच पुत्र तथा सुभद्राकुमार अभिमन्यु, सभी तुम्हारा चरण स्पर्श करेंगे। इतना ही नहीं, पांडवों की सहायता में आये हुए समस्त राजे-महाराजे और अंधक और वृष्णिवंशी योद्धा, सब तुम्हारे सामने सिर टेकेंगे, क्योंकि तुम युधिष्ठिर से बड़े हो। बहुत-से राज-पुत्र और राज-कन्याएं तुम्हारे लिए धन-धान्य अर्पित करेंगे। पांडव, यादव, पांचाल नरेश द्रुपद और मैं स्वयं तुम्हारा राज्याभिषेक करके तुम्हें सम्राट पद देंगे। कुंतीकुमार कर्ण! नक्षत्रों से घिरे हुए चंद्रमा की भांति तुम पांडवों से घिरे रहकर राज्य का पालन करो और कुंती को प्रसन्न करो।

कर्ण ने कहा–श्रीकृष्ण! मैं भी जानता हूं कि मैं कुंती का पुत्र हूं, परंतु कुंती ने तो मुझे पैदा होते ही फेंक दिया था। कुंती देवी ने तो मुझे इस तरह त्यागा था कि मैं जीवित नहीं रह सकता था। यह तो सूत अधिरथ ने मुझे उठाकर अपनी पत्नी राधा की गोद में दिया और मैं उन दोनों के स्नेह में पला।

ऐसी अवस्था में मैं अपनी पालक माता के मुख का ग्रास कैसे छीन सकता हूं ? उसका पालन-पोषण न करके उसको त्याग देने की क्रूरता कैसे कर सकता हूं ? सूत अधिरथ मुझे अपना पुत्र ही समझते हैं और मैं भी उन्हें पिता मानता हूं। उन्होंने मेरा जातकर्म करवाया और ब्राह्मणों द्वारा मेरा नाम 'वसुषेण' रखवाया। मेरे जवान होने पर सूत जाति की कई कन्याओं से मेरा विवाह करवाया। गोविंद! मैं पृथ्वी का राज्य पाकर, सोने की राशि लेकर और हर्ष अथवा भय से वह संबंध मिथ्या नहीं करना चाहता। मैने दुर्योधन के बल पर तेरह वर्षों से राज्य-सुख भोगा है। दुर्योधन ने मेरे ही भरोसे पर युद्ध की तैयारी की है। उन्होंने अर्जुन से लोहा लेने के लिए मुझे ही चुना है। अतएव बल, बंधन, भय तथा लोभ से मैं दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ सकता। "हे मधुसूदन! मेरे और आपके बीच में जो यह गोपनीय बात हुई है, उसे आप यहीं तक सीमित रखें। यादवनंदन! ऐसा करने से ही मैं यहां सब भांति से हित समझता हूं।" कृष्ण! इस मंत्र को गुप्त रखते हुए अर्जुन को मेरे साथ युद्ध करने के लिए ले आवें।

विदुर ने कुंती के सामने युद्ध के भयावह परिणाम का वर्णन किया। इससे वह व्यथित हो गयी। वह कर्ण के पास गयी। कर्ण उपासना में लगा था। कुंती उसके पीछे खड़ी हो गयी। जब कर्ण उपासना से निवृत्त हुआ तब घूमकर देखा, तो सामने कुंती खड़ी है। कर्ण मुस्कुराता हुआ प्रणाम किया और बोला-देवि! मैं सूत अधिरथ और माता राधा का पुत्र हूं। आपने यहां आने का कष्ट किसलिए किया ? मैं आपकी क्या सेवा करूं ?

कुंती ने कहा-कर्ण! तुम राधा के नहीं, अपितु कुंती के पुत्र हो। तुम्हारे पिता अधिरथ नहीं हैं। तुम सूतकुल में उत्पन्न नहीं हो। मैंने राजा कुंतिभोज के घर में रहकर तुम्हें गर्भ में धारण किया था। अतएव बेटा! तुम पार्थ हो। बेटा! तुम अपने भाइयों से अपरिचित रहकर मोहवश दुर्योधन के साथ हो, यह उचित नहीं है। अतएव आज तुम भाईचारे के साथ पांडव से मिल जाओ और कर्ण-अर्जुन का मिलन देखकर दुष्ट लोग हतप्रभ हो जायं।

कर्ण ने कहा-राजपुत्रि! तुमने जो कुछ कहा है, उस पर मेरी श्रद्धा नहीं हो रही है। तुम्हारी आज्ञा का पालन मेरे लिए धर्म नहीं है। माता! तुमने जो मुझे जन्मते ही पानी में फेंक दिया, वह मेरे लिए यश और कीर्ति का नाशक हो गया। यद्यपि मैं क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ, परंतु तुम्हारे दुरुपयोग से मैं क्षत्रिय-संस्कार से वंचित रहा। कोई शत्रु भी मेरा इससे बड़ा अनर्थ क्या कर

. **मन्त्रस्य नियमं कुर्यास्त्वमत्र मधुसूदन।**
एतदत्र हितं मन्ये सर्वं यादवनन्दन उद्योग० ,

सकता है ? जब मेरे हित के लिए कुछ करने का समय था, उस समय तुमने मेरे ऊपर दया नहीं की, अब आज दया दिखा रही हो। पहले अपने मातृत्व का आदर नहीं किया, आज अपने स्वार्थवश मुझे कर्तव्य का उपदेश दे रही हो। आज के पहले मुझे कोई नहीं जानता था कि मैं पांडवों का भाई हूं। युद्ध के समय मेरा यह संबंध बताया जा रहा है। यदि इस समय मैं पांडवों से मिल जाऊं तो मुझे क्षत्रिय-समाज क्या कहेगा ? मुझे ऐश्वर्य देने वाले दुर्योधन को मैं धोखा कैसे दे सकता हूं ? आज मुझे अपने प्राण की रक्षा न करके दुर्योधन के ऋण से उऋण होना है। मैं झूठ नहीं बोल सकता। धृतराष्ट्र के पुत्रों के लिए मैं तुम्हारे पुत्रों से युद्ध करूंगा। लेकिन तुम्हारा मेरे पास आना निष्फल नहीं होगा। मैं अर्जुन के अलावा तुम्हारे चारों पुत्रों को नहीं मारूंगा। (अध्याय –)।

मीमांसा

कुंती वृष्णिवंश की कन्या थी। कुंतिभोज ने उसे गोद लिया था। उसके युवती होने के समय कुंतिभोज के यहां एक ब्राह्मण आये और वे एक वर्ष उनके यहां रहे। कुंतिभोज ने अपनी युवती पुत्री को उस ब्राह्मण की सेवा में लगा दिया। एक वर्ष तक दो युवक-युवतियों का संपर्क रहा। उसी ब्राह्मण से कुंती गर्भवती हुई और समय से कर्ण पैदा हुआ। इस प्रकार कर्ण की माता क्षत्राणी तथा पिता ब्राह्मण था। पृथ्वी से तेरह लाख गुणा बड़े आग के दहकते हुए पिंड सूरज ने कुंती को गर्भवती किया, यह अनर्गल बात है। कर्ण ने कृष्ण से कहा– यह बात जो आपने मुझसे कही है, उसे यहीं तक रहने दीजिएगा, अन्य जगह न कहिएगा। कर्ण ने कृष्ण की इज्जत बचाने के लिए ही ऐसा कहा होगा। उसने सोचा कि कृष्ण की यह बात जानकर लोग उनकी निंदा ही करेंगे।

कर्ण अपनी नैतिकता में पक्का है। श्रीकृष्ण की तरह वह चालबाजी नहीं करता है। उसे पांडवों के प्रति ईर्ष्या है, यह उसका दोष है, किंतु स्वयं में वह अपनी नैतिकता का पक्का है।

. श्रीकृष्ण द्वारा पांडवों के सामने भीष्म, द्रोण, विदुर, गांधारी तथा धृतराष्ट्र का मंतव्य कहना

श्रीकृष्ण हस्तिनापुर से उपप्लव्य नगर में आकर पांडवों से मिले और उन्होंने हस्तिनापुर की बातें संक्षेप में सुनायीं। तत्पश्चात विश्राम करने चले गये। विश्राम के बाद पांचों पांडवों के पास बैठे। युधिष्ठिर ने कहा–श्रीकृष्ण! आपने हस्तिनापुर में जाकर दुर्योधन से क्या कहा ? वह सब बताने की कृपा करें। श्रीकृष्ण ने

कहा–राजन! मैंने कौरव-सभा में कौरव-पांडव दोनों के लिए हितकर बात कही, परंतु दुर्योधन ने एक बात भी नहीं सुनी।

युधिष्ठिर ने कहा–दुर्योधन द्वारा आपकी बात की अवहेलना करने पर भीष्म, द्रोणाचार्य, धृतराष्ट्र, गांधारी और मेरे हितचिंतक छोटे चाचा विदुर ने दुर्योधन को क्या कहा ? इसके सिवा वहां उपस्थित राजों-महाराजों ने क्या कहा ? मैं उन सबकी कही हुई बातों को सुनना चाहता हूं। आप ऐसा करें कि हम लोगों का समय व्यर्थ में न नष्ट हो। आप ही हम लोगों के आश्रय, रक्षक और गुरु हैं।

श्रीकृष्ण ने कहा–जब मैंने अपनी बात दुर्योधन को सुनायी तब वह हंसने लगा। अतएव उसकी अवहेलनामयी भंगिमा देखकर भीष्म पितामह ने डांटते हुए उससे कहा–कुल के हित के लिए जो मैं कहने जा रहा हूं उसे ध्यान से सुनो! मेरे पिता शांतनु विश्वविख्यात नरेश थे। मैं उनका एकलौता पुत्र हूं। उन्होंने दूसरे पुत्र की इच्छा की, क्योंकि एक पुत्र वाला पुत्रहीन ही माना जाता है। मैंने पिता की इच्छा जानकर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत से रहने के लिए प्रतिज्ञा कर ली और उनके लिए मैं माता सत्यवती को मछुआरे से मांग लाया। सत्यवती से विचित्रवीर्य उत्पन्न हुए वे मेरे छोटे भाई हुए। पिता शांतनु के मर जाने पर मैंने अपने छोटे भाई विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बैठाया और मैं उनका सेवक होकर राजसिंहासन के नीचे खड़ा रहा। मैंने काशी में राजाओं के समूह को जीतकर अपने भाई के लिए योग्य पत्नियां लायीं। यह बात तुमने अनेक बार सुनी होगी। विचित्रवीर्य अपनी पत्नियों में अधिक विषयलंपट होने से राजयक्ष्मा रोग से पीड़ित होकर जवानी ही में मर गये।

इसके बाद माता सत्यवती, पुरवासी, सेवक, प्रजा, आचार्य, ब्राह्मण मुझे राजगद्दी पर बैठने के लिए आग्रह किये। मैंने इस प्रस्ताव से दुखी होकर अपनी प्रतिज्ञा दोहरायी कि मैंने जैसे आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत लिया है वैसे राजगद्दी पर आजीवन न बैठने का व्रत भी लिया है। अतएव राजगद्दी पर नहीं बैठ सकता। अंततः माता सत्यवती और मैंने मिलकर अपने बड़े भाई वेदव्यास कृष्णद्वैपायन को अनुनय-विनय करके राजी किया कि वे अपने छोटे भाई विचित्रवीर्य की दोनों पत्नियों से पुत्र उत्पन्न करें। उन्होंने कृपा की और उनसे धृतराष्ट्र और पांडु को पैदा किया और एक दासी से विदुर को पैदा किया। दुर्योधन! तुम्हारे पिता अंधे थे, इसलिए वे राजा न हो सके। पांडु इस देश के राजा हुए। पांडु राजा होने से उनके पुत्र पांडव राज्य के अधिकारी हैं। अतएव बेटा दुर्योधन! तुम पांडवों को आधा राज्य दे दो। मेरे जीवन-काल में मेरी इच्छा के विरुद्ध यहां कौन राज्य कर सकता है ? मेरी आज्ञा की अवहेलना न करो। मेरी कामना है कि तुम

लोगों में शांति बनी रहे। मेरी दृष्टि में तुम्हारे और पांडवों में कोई अंतर नहीं है। तुम्हारे पिता की यही राय है और तुम्हारी माता की यही सम्मति है और तुम्हारे छोटे चाचा विदुर का भी यही विचार है। तुम्हें बड़े-बूढ़ों की बात मानना चाहिए। यदि यह राय न मानोगे तो समझ लो कि तुम अपने को, परिवार को, तथा भूतल के अन्य राजाओं को विनष्ट करोगे।

द्रोणाचार्य ने राजाओं के बीच में दुर्योधन से इस प्रकार कहा–जैसे राजा शांतनु इस कुल की भलाई में लगे रहे, जैसे देवव्रत भीष्म कुल की भलाई में समर्पित रहे, वैसे पांडु कौरव कुल की उन्नति में समर्पित रहे। पांडु अपना राज्य धरोहर के रूप में अपने बड़े भाई धृतराष्ट्र और छोटे भाई विदुर को सौंप कर अपनी दोनों पत्नियों कुंती और माद्री के साथ वन चले गये। विदुर अपने बड़े भाई धृतराष्ट्र पर चंवर डुलाते हुए सेवक की तरह खड़े रहने लगे। इसके साथ वे खजाना संभालते, दान देते, नौकरों की देखभाल करते और प्रजा के भरण-पोषण में समर्पित रहते थे। भीष्म पितामह संधि-विग्रह नीति में निपुण हैं। वे राजाओं से सेवा और कर (टैक्स) आदि लेते थे। धृतराष्ट्र तो केवल सिंहासन पर बैठे रहते थे; खास काम विदुर करते थे। दुर्योधन! तुम उसी कुल में रहते हुए, उसमें फूट क्यों डालते हो ? भाइयों से मिलकर राज्य का उपभोग करो। मैं न दीन होकर कोई बात कहता हूं और न धन पाने के लिए कहता हूं। मैं भीष्म का दिया हुआ पाना चाहता हूं, तुम्हारा दिया नहीं। मैं तुमसे जीविका का साधन नहीं पाना चाहता हूं। जहां भीष्म है, वहां द्रोण है। जो भीष्म कहते हैं उसका पालन करो। तुम पांडवों को आधा राज्य दे दो। बेटा! मेरा गुरुत्व तुम्हारे और पांडवों के लिए समान है। "मेरे लिए जैसे मेरा पुत्र अश्वत्थामा है, वैसे श्वेत घोड़ों वाला अर्जुन है। अधिक बकबक से क्या लाभ ? जहां धर्म है, वहां विजय है।"

इसके बाद विदुर ने भीष्म की तरफ देखते हुए उनसे कहा–कौरव-वंश नष्ट हो चला था, उसका आपने उद्धार किया। मैं इसी वंश की रक्षा के लिए रो रहा हूं, परंतु न जाने क्यों आप मेरी बातों की उपेक्षा कर रहे हैं। मैं आपसे पूछता हूं कि यह कुल का नाशक दुर्योधन इस कुल का कौन है ? इसी लोभी का आप क्यों अनुसरण कर रहे हैं ? लोभ ने इसकी बुद्धि नष्ट कर दी है। यह पूरा अनर्थ बन गया है। यह शास्त्र-वचनों का तिरस्कार तो करता ही है, अपने पिता के

. **अश्वत्थामा यथा मह्यं तथा श्वेतहयो मम ।**
बहुना किं प्रलापेन यतो धर्मस्ततो जयः

(उद्योग पर्व, अध्याय , श्लोक)

धर्म और अर्थ की भी बात नहीं मानता है। निश्चित ही एक दुर्योधन के कारण कौरव-वंश का विनाश दिखता है। ऐसा उपाय कीजिए कि कुल का नाश न हो। पिता भीष्म! आपने राजा धृतराष्ट्र को तथा मुझे उसी प्रकार निकम्मा बनाकर बैठा दिया है, जिस प्रकार चित्रकार चित्रों को बनाकर एक जगह रख देता है। आप अपने कुल के भावी विनाश की उपेक्षा न कीजिए। यदि इन दिनों आपकी बुद्धि नष्ट हो गयी हो तो आप, धृतराष्ट्र और मैं वन में चले चलें। अथवा इस दुष्ट दुर्योधन को बांधकर पांडवों द्वारा सुव्यवस्थित राज्य कीजिए। विदुर ऐसा कह कर जोर से श्वास लेते हुए दीनचित्त हो चुप हो गये।

गांधारी ने राजाओं के बीच में दुर्योधन को फटकारते हुए कहा–कौरवों की परंपरा है कि पिता के बाद पुत्र राजगद्दी पर बैठे। पांडु ने अपने भाई धृतराष्ट्र और विदुर को धरोहर के रूप में राज्य सौंपा था। दुर्योधन! तू इन दोनों की उपेक्षा करके राज्य पर अपना प्रभुत्व कैसे जमाना चाहता है? वैसे राज्य के अधिकारी भीष्म हैं, किंतु उनकी प्रतिज्ञा है कि मैं राजगद्दी पर नहीं बैठूंगा। अतएव यह राज्य महाराज पांडु का है; और उनके पुत्र इसको पाने के अधिकारी हैं। कुरुकुल-श्रेष्ठ महात्मा भीष्म जो कुछ कहते हैं, उसे हम लोगों को बिना काट-छांट किये स्वीकारना चाहिए। अथवा भीष्म की आज्ञा से धृतराष्ट्र तथा विदुर भी कुछ कह सकते हैं। उसका हमें पालन करना चाहिए। कौरवों के इस देश पर युधिष्ठिर ही राज्य करें और वे राजा धृतराष्ट्र तथा भीष्म से राय लेते रहें।

धृतराष्ट्र ने राजाओं के बीच इस प्रकार कहा–बेटा दुर्योधन! यदि तू अपने पिता का कुछ भी महत्त्व समझता है तो मेरी कही हुई बात का पालन कर। कौरव-वंश के आदि कारण राजा सोम हुए हैं। सोम की छठीं पीढ़ी में नहुष के पुत्र राजा ययाति हुए हैं। ययाति के पांच पुत्र थे, उनमें श्रेष्ठ यदु थे। ये ययाति द्वारा शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से पैदा हुए थे; और छोटे पुत्र का नाम पुरु हुआ जो ययाति द्वारा वृषपर्वा दैत्य की पुत्री शर्मिष्ठा से पैदा हुए थे। यदु से यादव-वंश चला। यदु बहुत घमंडी थे, इसलिए राजा ययाति ने यदु को हटाकर हस्तिनापुर की राजगद्दी पर अपने छोटे पुत्र पुरु को बैठाया। इसलिए यह सिद्ध हुआ कि घमंडी होने से बड़ा पुत्र भी राज्य का अधिकारी नहीं होता है और विनम्र होने से छोटा पुत्र भी राज्य का अधिकारी होता है।

मेरे पिता के पितामह राजा प्रतीप थे। उनके तीन पुत्र हुए जिनके नाम बड़े-छोटे की दृष्टि से क्रमशः देवापि, वाह्लीक तथा शांतनु हैं। श्रेष्ठ पुत्र देवापि योग्य, उदार तथा धर्मपरायण थे और तीनों भाइयों में परस्पर मधुर बरताव था; परंतु

देवापि चर्मरोग से पीड़ित थे। राजा प्रतीप ने राज्याभिषेक की तैयारी की और देवापि का राज्याभिषेक कराना चाहा; परंतु ब्राह्मणों, वृद्ध पुरुषों और नगर तथा जनपद के लोगों ने देवापि का राज्याभिषेक रोक दिया। इससे राजा प्रतीप बहुत दुखी हुए। यद्यपि देवापि धर्मज्ञ तथा उदार थे, किंतु चर्मरोग से ग्रस्त होने के कारण वे राज्याभिषेक के अयोग्य मान लिए गये। जो किसी अंग से हीन हो, वह राजगद्दी के योग्य नहीं माना जाता है। इसलिए श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने देवापि को राजगद्दी के अयोग्य घोषित कर दिया।

इससे राजा प्रतीप को बड़ा दुख हुआ। वे शोक में डूब गये। देवापि वन में तपस्या के लिए चले गये और मझले भाई वाह्लीक अपने मामा के यहां चले गये। कुछ दिन में पिता प्रतीप की मृत्यु होने पर उनके छोटे पुत्र शांतनु ने अपने बड़े मझले भाई वाह्लीक से राय लेकर राजगद्दी सम्हाली। इसी प्रकार मैं भी अंगहीन–अंधा होने से प्रजा द्वारा राजगद्दी के लिए मुझे अयोग्य माना गया। पांडु मुझसे छोटे होने पर भी राजगद्दी के अधिकारी हुए और उन्होंने योग्यतापूर्वक राज्य का शासन किया। अतएव दुर्योधन! पांडु के मरने के बाद यह राज्य उनके पुत्रों–पांडव का ही है। "मैं तो राज्य का अधिकारी था ही नहीं, फिर तू इस राज्य को किस आधार से लेना चाहता है ? जो राजा का पुत्र नहीं है, वह राज्य का अधिकारी कैसे हो सकता है ? तू पराये धन का अपहरण करना चाहता है।"

महात्मा युधिष्ठिर राजपुत्र हैं, अतएव राज्य पर उन्हीं का अधिकार है। वे ही कौरव-वंश के पोषक हैं। उनका प्रभाव भी महान है। "उनमें क्षमा, सहनशीलता, संयम, सरलता, सत्यपरायणता, शास्त्रज्ञान, प्रमादशून्यता, सभी प्राणियों पर दयाभाव, गुरुजनों के शासन में रहने की प्रवृत्ति तथा समस्त राजोचित सद्‌गुण विद्यमान हैं।"

दुर्योधन! तू राजा का पुत्र नहीं है। तेरा व्यवहार बुरा है। तू लोभी और बंधु-बांधवों के प्रति बुरे विचार रखनेवाला है। हे हठी और अहंकारी! परंपरागत यह राज्य पांडवों का है। तू इसका अपहरण कैसे करेगा ? अतएव तू

. **मय्यभागिनि राज्याय कथंत्वं राज्यमिच्छसि।**
अराजपुत्रो ह्यस्वामी परस्वं हर्तुमिच्छसि
(उद्योग पर्व, अध्याय , श्लोक)

. **क्षमा तितिक्षा दम आर्जवं च सत्यव्रतत्वं श्रुतमप्रमादः।**
भूतानुकम्पा ह्यनुशासनं च युधिष्ठिरे राजगुणाः समस्ताः
(उद्योग पर्व ,)

मोह छोड़ दे और तू वाहनों तथा अन्य सामग्रियों के सहित आधा राज्य पांडवों को दे दे, तभी तू अपने परिवार सहित जीवित रह सकेगा।

इस प्रकार श्रीकृष्ण ने भीष्म, द्रोण, विदुर, गांधारी तथा धृतराष्ट्र के विचार बताकर कहा–उपर्युक्त हितैषी स्वजनों की हितकारी बातें सुनकर भी दुर्योधन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह मूर्ख गुस्सा में भरकर सभा से उठकर चला गया और उसके साथ सब राजे-महाराजे भी अपने जीवन का मोह छोड़कर सभा से चले गये। दुर्योधन ने उन राजाओं को आज्ञा दी कि आप लोग आज के पुष्य नक्षत्र में कुरुक्षेत्र में चलो। इसके बाद भीष्म के नेतृत्व में सब राजे कुरुक्षेत्र के लिए चले गये। कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी सेना है और उसके नायक भीष्म हैं। मैंने कौरवों का सब वृत्तांत सुना दिया। अब आपको जो इच्छा हो वह करो।

श्रीकृष्ण ने आगे कहा–मैंने सामनीति से ऐसी बातें की कि भाइयों में फूट न हो और प्रजा की निरंतर उन्नति हो। जब मैं सामनीति के प्रयोग से सफल नहीं हुआ तब भेदनीति का प्रयोग किया। पांडवों के उत्तम गुण सुनाकर कौरवों में फूट डालने की चेष्टा की। मैंने वहां बहुत अद्‌भुत, भयंकर, निष्ठुर और अमानवीय कर्मों का भी प्रदर्शन किया। राजाओं को डांटा, दुर्योधन, कर्ण, और शकुनि को फटकारा, जुआबाजी की निंदा की और अपनी गुप्त मंत्रणा द्वारा कौरव-पक्ष के राजाओं में फूट डालने की चेष्टा की, जिससे विनाशकारी युद्ध न हो।

मैंने कहा–यद्यपि पांडव वीर हैं, तथापि वे अभिमान छोड़कर भीष्म, धृतराष्ट्र और विदुर के नीचे रहने के लिए तैयार हैं। मैंने कहा–दुर्योधन! सारा राज्य तुम्हारे पास रहे, तुम पांडवों को केवल पांच गांव दे दो, क्योंकि तुम्हारे पिता का यह परम कर्तव्य है कि वे पांडवों का भरण-पोषण करें। इतने पर भी दुर्योधन कुछ भी देने के लिए तैयार नहीं हुआ। अब तो मैं उन पापियों पर दंड का प्रयोग ही उचित समझता हूं, क्योंकि मेरी साम, दाम तथा भेदनीति व्यर्थ हो चुकी है। कौरव-पक्ष के सब राजा कुरुक्षेत्र के लिए प्रस्थान कर चुके हैं। पांडुनंदन! कौरव बिना युद्ध के तुम्हें राज्य नहीं देंगे। भावी विनाश ही दिखता है (अध्याय -)।

. युधिष्ठिर का सेना सहित कुरुक्षेत्र में पड़ाव

श्रीकृष्ण द्वारा दुर्योधन की मनसा जानकर युधिष्ठिर ने भाइयों के मंतव्य जानना चाहा। उन्होंने कहा कि हमारी सात अक्षौहिणी सेनाएं हैं। इनके सात

सेनापति हैं–द्रुपद, विराट, धृष्टद्युम्न, शिखंडी, सात्यकि, चेकितान और भीमसेन। अब विचार यह करना है कि इन सातों का भी नेता कौन हो, जो सभी सेनाविभाग को जानता हो और भीष्म का प्रहार सह सकता हो। सहदेव! तुम बताओ कि प्रधान सेनापति कौन हो? सहदेव ने मत्स्यनरेश विराट का नाम लिया, नकुल ने द्रुपद का नाम लिया, अर्जुन ने धृष्टद्युम्न का नाम लिया और भीम ने शिखंडी का नाम लिया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन की ओर देखकर उनके प्रस्ताव में आये धृष्टद्युम्न का समर्थन किया।

पांडवों की सेना सिंहनाद करती हुई कुरुक्षेत्र में पहुंची और उसने अपना पड़ाव डाल दिया। पड़ाव डालने में यह सावधानी रखी गयी कि श्मशान, देवमंदिर, ऋषियों के आश्रम, तीर्थ और सिद्ध क्षेत्र से हटकर सेना का पड़ाव रहे। कुरुक्षेत्र में हिरण्यवती नामक नदी बहती थी। उसके पास चिकनी और समतल भूमि में पड़ाव डाले गये। श्रीकृष्ण ने सैकड़ों भूमिपालों का सहयोग लेकर वहां पहले पहुंचे दुर्योधन के सैकड़ों सैनिकों को भगाकर कब्जा कर लिया। पड़ाव के चारों तरफ खाइयां खुदवायी गयीं। सभी राजाओं और सेनापतियों के पड़ाव अलग-अलग बनाये गये। शिविरों में लकड़ी तथा अन्न का बड़ा भंडार रखा गया। सैकड़ों शिल्पी तथा शास्त्र विशारद वैद्य वेतन देकर रखे गये थे। हर शिविर में प्रत्यंचा, धनुष, कवच, अस्त्र-शस्त्र, मधु, घी और राल का चूरा पहाड़ जैसा लगा दिया गया था। राल का चूरा दुश्मनों पर फेंककर आग लगायी जाती थी। सहायक नरेश भी युद्ध में सम्मिलित होने के लिए आये, और उनके भी पड़ाव पड़ गये (अध्याय –)।

. दुर्योधन की सेना का कुरुक्षेत्र में पड़ाव और सेनापतियों का अभिषेक

श्रीकृष्ण जब हस्तिनापुर से चले गये, तब दुर्योधन ने कर्ण, दुःशासन और शकुनि से कहा–श्रीकृष्ण यहां से असफल होकर लौटे हैं; अतएव वे कुपित होकर निश्चय ही पांडवों को युद्ध के लिए उकसायेंगे। वस्तुतः कृष्ण यही चाहते हैं कि पांडवों से मेरा युद्ध हो। भीम और अर्जुन तो कृष्ण के ही मत में रहने वाले हैं। युधिष्ठिर भी प्रायः भीम के वश में रहते हैं। इसके अतिरिक्त मैंने पहले उन सभी भाइयों का तिरस्कार किया है। विराट और द्रुपद मेरे प्रति पहले से ही वैर बांधे बैठे हैं। अतएव हम लोगों का यह पांडवों के साथ होने वाला युद्ध बड़ा भयंकर होगा। राजाओ! आप लोग आलस्य छोड़कर कुरुक्षेत्र चलें और अपने पड़ाव वहां डाल दें।

. दुर्योधन की सेना का कुरुक्षेत्र में पड़ाव और सेनापतियों का अभिषेक

दुर्योधन का आदेश पाते ही राजे-महाराजे युद्ध के लिए उछल पड़े और सब उष्णीष, अंतरीय, उत्तरीय, पगड़ी, धोती और चादर सम्हालने लगे। रथ, हाथी, घोड़ों पर सवार तथा पैदल सैनिक चल पड़े और कुरुक्षेत्र में कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी सेना का पड़ाव विधिवत पड़ गया। दुर्योधन के पड़ाव में तरकश, वरुथ (रथ को ढकने का बाघ आदि का चमड़ा), उपसंग (बड़े तरकश जिन्हें हाथी, घोड़े उठा सकें), तोमर, शक्ति, निषंग (पैदलों द्वारा ले जाय जाने वाले तरकश), ऋष्टि (लोहे की लाठी), ध्वजा, पताका, धनुष, बाण, विविध प्रकार की रस्सियां, पाश, बिस्तर, कचग्रह-विक्षेप (बाल पकड़कर गिराने का यंत्र), तेल, गुड़, बालू, विषधर सर्पों से भरे घड़े, राल का चूरा, घंट फलक (घुंघुरु वाली ढाल), तलवार, लोहे के अस्त्र, औंटा हुआ गुड़ का पानी, ढेले, साल भिंदिपाल (हाथ से फेंका जाने वाला छोटा डंडा), मोम चुपड़े हुए मुगदर, कांटीदार लाठियां, हल, विष लगे हुए बाण, सूप, टोकरियां, दरात, अंकुश, कांटेदार कवच, बसूले, आरे, बाघ और गैंडे के चमड़े से मढ़े हुए रथ, सींग, प्रास, कुठार, कुदाल, तेल में भीगे हुए रेशमी वस्त्र तथा घी के विशाल भंडारण थे।

दुर्योधन ने भीष्म के पास जाकर कहा-पितामह! कितनी ही बड़ी सेना हो, योग्य सेनापति के बिना वह चींटियों की पंक्ति की तरह तितर-बितर होकर नष्ट हो जाती है। दो मनुष्यों की बुद्धि कभी समान नहीं होती। यदि दोनों ओर योग्य सेनापति हों तो उनकी वीरता एक-दूसरे की होड़ में बढ़ती है। मैंने सुना है कि एक बार ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र एकजुट होकर क्षत्रियों से लड़ गये, परंतु वे किसी योग्य सेनापति के अभाव में हार गये। इसके बाद अपने हारने का कारण ब्राह्मणों ने क्षत्रियों से ही पूछा, तब क्षत्रियों ने बताया कि आपकी सेना का कोई कुशल नायक नहीं था। इसके बाद ब्राह्मणों ने एक शूरवीर तथा नीति-निपुण ब्राह्मण को सेनापति बनाया और विजय पायी। आप हमारे हितचिंतक हैं, पितामह भीष्म! आप हमारी सेना के प्रधान सेनापति बनें।

भीष्म ने कहा-मेरे लिए जैसे तुम हो वैसे पांडव हैं। मैं पांडवों के पूछने पर अवश्य ही उनके लिए हित की बात बताऊंगा, किंतु तुम्हारे लिए युद्ध करूंगा। मैं पांडवों की हत्या नहीं करूंगा। यदि वे मुझे पहले ही नहीं मार डालें तो मैं प्रतिदिन दस हजार सैनिकों को मारूंगा। मैं उपर्युक्त शर्त पर तुम्हारा प्रधान सेनापति बन सकता हूं। एक बात और, पहले मैं युद्ध कर लूं या कर्ण; क्योंकि कर्ण सदैव मेरी स्पर्द्धा रखता है। कर्ण ने कहा-पितामह! आप प्रधान सेनापति बनकर युद्ध करें। दुर्भाग्य से आपके न रहने पर मैं लड़ूंगा। इसके बाद

दुर्योधन ने भीष्म पितामह का प्रधान सेनापति के पद पर अभिषेक किया। साथ–साथ अपनी ग्यारह अक्षौहिणी सेना के ग्यारह सेनापतियों का अभिषेक किया, जिनका परिचय इस प्रकार है–कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, मद्रराज शल्य, सिंधुराज जयद्रथ, कंबोजराज सुदक्षिण, कृतवर्मा, कर्ण, भूरिश्रवा, शकुनि तथा महाबली बाह्लीक (अध्याय –)।

. युधिष्ठिर का अनुताप, अंततः युद्ध की तैयारी

युधिष्ठिर भावी युद्ध से भयभीत हैं। वे उसके दुखद परिणाम पर सोचते हैं; इसलिए वे श्रीकृष्ण से पुनः कहते है–दुर्योधन क्यों कुछ नहीं देने के लिए तैयार है ? हे श्रीकृष्ण! आप दुर्योधन, कर्ण, शकुनि तथा मेरे भाइयों सहित मेरा विचार जानते हैं। विदुर, भीष्म, कुंती के विचार आप जानते हैं। परंतु आप इन विचारों से ऊपर उठकर मेरे कर्तव्य के लिए निर्णय दीजिए जिससे मैं अपने धर्म से नीचे न गिरूं।

श्रीकृष्ण ने कहा–मेरी सर्व हितकारी बातें दुर्योधन के मन में नहीं बैठती हैं। वह भीष्म, विदुर तथा मेरी बातों को लांघकर अपने हठ में पड़ा रहता है। दुर्योधन कर्ण की बातों में पड़कर सारी वस्तुओं को जीती हुई समझता है। इसलिए उसे अधर्म और अपयश दिखायी नहीं देते। दुर्योधन ने तो मुझे ही कैद कर लेने की योजना बना रखी थी, परंतु सफल नहीं हुआ। याद रखो, भीष्म और द्रोणाचार्य भी सब समय उचित बात नहीं कहते हैं। केवल विदुर निर्भय होकर दुर्योधन के अपराध का सब समय विरोध करते हैं। शेष सभी कौरव अंततः दुर्योधन का ही अनुसरण करते हैं। शकुनि, कर्ण और दुःशासन ने दुर्योधन के सामने आपको कटु कहा है। उन लोगों ने जो आपके लिए अनुचित बातें कहीं हैं उन्हें यहां दोहराने से क्या लाभ है ? थोड़े में यही समझ लीजिए कि कौरव आपके लिए न्यायपूर्ण बरताव नहीं करना चाहते। हम लोग भी सर्वस्व खोकर कौरवों के साथ संधि की इच्छा नहीं रखते हैं। अतएव हमारे लिए तो एक ही रास्ता है कि हम उनसे युद्ध करें।

उपस्थित पांडव पक्ष के राजा श्रीकृष्ण की उक्त बातें सुनकर युधिष्ठिर का मुख देखने लगे। युधिष्ठिर ने राजाओं का अभिप्राय समझकर अपने भाइयों तथा राजाओं को युद्ध करने की आज्ञा दे दी। आज्ञा पाते ही सभी योद्धा हर्ष में उत्साहित होकर गर्जना करने लगे।

युधिष्ठिर को यह देखकर तुरंत दुख हुआ कि युद्ध में उन लोगों की हत्या होगी जो निर्दोष हैं और जो नहीं मारे जाने योग्य हैं। अतएव वे दुख से लंबी

सांसें खींचते हुए भीम और अर्जुन से इस प्रकार बोले–हम जिससे बचने के लिए वनवास का दुख सहे, वही अनर्थ हमारे ऊपर आने वाला है। जिसको हम टालना चाहते रहे वह मेरे ऊपर बलात आ गया है। जो लोग मारने योग्य नहीं हैं उनके साथ युद्ध करना कैसे उचित होगा ? वृद्ध गुरुजनों को मारकर मेरी विजय कैसी होगी ?

उक्त बातें सुनकर अर्जुन ने श्रीकृष्ण की ही बातें दोहरा दीं। राजन! श्रीकृष्ण ने माता कुंती और विदुर की बातें आपको बतायी हैं, अतएव उस पर आपने विचार किया होगा। मेरा यह निश्चित मत है कि वे दोनों अधर्म की बातें नहीं कहेंगे। राजन! अब हमारे लिए युद्ध से हटना उचित नहीं है।

अर्जुन की उक्त बातें सुनकर श्रीकृष्ण भी मुस्कराते हुए युधिष्ठिर से बोले–हां, अर्जुन ठीक कहते हैं। अंततः युद्ध की तैयारी हो गयी (अध्याय)।

. युधिष्ठिर द्वारा सेनापतियों का अभिषेक और बलराम का पांडवों के पास आकर चले जाना

युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण तथा अपने भाइयों को बुलाकर कहा–तुम लोग अपनी सेना में घूमकर उनका निरीक्षण करो और कवच आदि से सुसज्जित होकर खड़े हो जाओ। सबसे पहले पितामह भीष्म से ही तुम लोगों का युद्ध होगा; इसलिए अपनी सात अक्षौहिणी सेना की ठीक देखभाल कर लो।

श्रीकृष्ण युधिष्ठिर के आदेश से प्रसन्न हुए और उन्होंने उन्हें अपनी सात अक्षौहिणी सेना के सेनापतियों का निर्धारण करने की राय दी। इसके बाद युधिष्ठिर ने द्रुपद, विराट, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, धृष्टकेतु, शिखंडी और मगधनरेश सहदेव को सातों अक्षौहिणियों की सेना के सेनापति के रूप में निर्धारित कर उनका अभिषेक किया। इसके बाद अर्जुन को उन समस्त सेनापतियों का अधिपति बनाया। स्वयं श्रीकृष्ण अर्जुन के नेता, रथचालक और उनके रथ के घोड़ों के रक्षक बने।

इसी बीच श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम जी आ गये। सबने उठकर उनका स्वागत किया। बलराम वृद्ध राजा द्रुपद का प्रणाम कर युधिष्ठिर के पास बैठ गये। बलराम के साथ यदुवंशी गद, सांब, उद्धव, प्रद्युम्न, चारुदेष्ण तथा आहुक के पुत्र भी आये थे। वे सब, अन्य राजे-महाराजे तथा श्रीकृष्ण–सब बैठ गये। बलराम जी ने श्रीकृष्ण की ओर देखते हुए सबसे कहा–महा भयंकर विनाश

का समय आ गया है। मैं इसे प्रारब्ध का अटल विधान मानता हूं। मेरा विश्वास है कि इस विनाशकारी युद्ध के बाद मैं अपने स्वजनों को अक्षत शरीर तथा सकुशल देखूंगा। इसमें इकट्ठे हुए राजों–महाराजों के शरीरों को काल ने निगलने के लिए पका दिया है। इस युद्ध में मांस–रक्त की कीच जमा होगी।

बलराम ने युधिष्ठिर की तरफ देखकर कहा–मैंने कृष्ण से अकेले में बारंबार कहा कि अपने सभी संबंधियों से एक समान बरताव करो, क्योंकि हमारे लिए जैसे पांडव हैं वैसे दुर्योधन तथा कौरव हैं। दुर्योधन भी सहायता के लिए बारंबार चक्कर लगाता है। लेकिन युधिष्ठिर! तुम्हारे लिए कृष्ण ने मेरी बात नहीं मानी। कृष्ण तो सदैव अर्जुन पर ही निछावर रहते हैं। मेरा निश्चित विश्वास है कि इस युद्ध में पांडवों की विजय होगी। कृष्ण का भी यही दृढ़ संकल्प है। मैं कृष्ण को छोड़कर नहीं रह सकता। यहां तक कि मैं उनके बिना जगत की ओर देख भी नहीं सकता। अतएव मैं कृष्ण का विरोध नहीं कर सकता। भीम और दुर्योधन दोनों मेरे शिष्य हैं। दोनों को मैंने गदायुद्ध की सीख दी है, इसलिए दोनों पर मेरा बराबर स्नेह है। मैं कौरवों का विनाश अपनी आंखों से देख नहीं सकता, अतएव मैं सरस्वती नदी के तटवर्ती तीर्थों में निवास करूंगा। इस प्रकार बलराम श्रीकृष्ण को संतोष देकर तथा पांडवों से विदा लेकर चल दिये। (अध्याय)।

मीमांसा

सरस्वती नदी की वेदों में बड़ी चर्चा हैं। विद्वानों का मत है कि यह राजस्थान में बहती थी, परंतु बहुत दिनों से वह लुप्त हो गयी है।

. विदर्भ–नरेश रुक्मी की सहायता पांडव–कौरव ने नहीं ली

कुंडिनपुर (विदर्भ क्षेत्र) राजा भीष्मक का पुत्र रुक्मी की बहिन रुक्मिणी का जब श्रीकृष्ण ने अपहरण कर लिया था तब वह श्रीकृष्ण से लड़कर हारा था और लज्जित होकर वह कुंडिनपुर लौटकर नहीं गया, अपितु वहीं पर भोजकट नामक नगर बसाया। उसने प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं कृष्ण को नहीं मार डालूंगा तब तक कुंडिनपुर नहीं जाऊंगा।

वही रुक्मी एक अक्षौहिणी सेना लेकर पांडवों के पास आया। वह श्रीकृष्ण का प्रिय कार्य करने के लिए आया था। युधिष्ठिर ने उसका आगमन सुनकर

अगवानी और स्वागत किया। सभी पांडवों ने रुक्मी की प्रशंसा की। विश्राम के बाद जब बैठक हुई तब रुक्मी ने अर्जुन से कहा–यदि आप युद्ध का समय आया हुआ देखकर डरे हुए हों तो मैं युद्ध में आपकी सहायता करने के लिए आ पहुंचा हूं। आप शत्रुओं की जिस टुकड़ी से लड़ने का दायित्व देंगे, उन सबका मैं संहार कर डालूंगा। यदि मेरे हिस्से में द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, भीष्म और कर्ण ही क्यों न हों, सबको मार डालूंगा। यदि केवल मुझे युद्ध सौंप दें तो मैं अकेला पूरा कौरव-वंश का संहार कर डालूंगा। रुक्मी ने उक्त सारी बातें युधिष्ठिर, श्रीकृष्ण तथा पांडव-पक्ष के सभी राजाओं के बीच में अर्जुन से कही।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर की ओर देखकर हंसते हुए मित्रभाव से रुक्मी से कहा–मैं कौरव-कुल में पैदा हुआ हूं, पांडु का पुत्र हूं। आचार्य द्रोण का शिष्य हूं। महाराज श्रीकृष्ण हमारे सहायक हैं और मैं स्वयं गांडीव धनुष धारण करता हूं। ऐसी दशा में मैं अपने को भयभीत कैसे कह सकता हूं? दुर्योधन की घोष-यात्रा में मैंने गंधर्वों से युद्ध कर उनकी रक्षा की थी, उस समय कौन-से मित्र ने मेरी सहायता की थी? खांडववन पर मेरी विजय के समय देवता और दानवों से भयंकर युद्ध में मेरा कौन सहायक था? निवात कवचों और कालकेयों से जब मेरा अकेला युद्ध हुआ था, उस समय मेरा कौन सहायक था? विराटनगर में जब दुर्योधन के पक्ष के विरोध में मेरा युद्ध चल रहा था, तब मेरी सहायता में कौन था? 'मैं डरा हुआ हूं' यह मेरे सुयश का नाशक वचन मेरे सामने कौन कह सकता है? वीर! मैं डरा हुआ नहीं हूं और मुझे सहायता की आवश्यकता नहीं है। आपकी जैसी इच्छा हो, आप चाहें तो घर लौट जायं अथवा यहीं रहें, मुझे आपकी सहायता नहीं चाहिए।

रुक्मी पांडवों से विदा होकर दुर्योधन के पास गया और जैसे अर्जुन से कहा था, वैसे दुर्योधन से भी कहा कि यदि आप भयभीत हैं तो मैं आपकी सहायता में आया हूं। दुर्योधन ने भी रुक्मी की सहायता अस्वीकार दी। इस प्रकार इस विशाल युद्ध से वृष्णवंशी रोहिणीनंदन बलराम और भोजवंशी भीष्मकनंदन रुक्मी अलग हो गये। बलराम तीर्थयात्रा में चले गये और रुक्मी अपने नगर को लौट गये (अध्याय)।

मीमांसा

बलराम का इस युद्ध से अलग होने में उनकी गंभीरता, दूरदर्शिता और शालीनता है; परंतु रुक्मी तो घमंडी स्वभाव लेकर पांडवों की सहायता में आया था और बचकाना वचन कहकर "यदि आप डरे हुए हैं तो मैं आपकी सहायता

में आया हूं'' अपना छिछलापन ही प्रकट किया था; और उसने ऐसी ही बेवकूफी भरे वचन दुर्योधन से भी कहे, तो दोनों से अस्वीकृति भरा कोरा उत्तर पाकर उसे लौटना ही था।

. दुर्योधन का उलूक को दूत बनाकर पांडवों को संदेश भेजना

पांडवों ने हिरण्यवती नदी के तट पर अपनी सेना का पड़ाव डाला, तब कौरवों ने भी दूसरी जगह पर अपना पड़ाव डाला। दुर्योधन ने अपनी शक्तिशाली सेना का ठहराव कर अपने पक्ष के राजाओं का आदर–सत्कार किया और उनकी रक्षा के लिए सैनिकों की टुकड़ियां नियुक्त कर दीं। इसके बाद उसने कर्ण, दुःशासन तथा शकुनि को बुलाकर गुप्त मंत्रणा की और उनकी सलाह लेकर शकुनि के पुत्र उलूक को दूत बनाकर पांडवों को संदेश देने के लिए विचार किया।

दुर्योधन ने कहा–उलूक! तुम कृष्ण के सामने पांडवों से मेरा संदेश ज्यों–का–त्यों कहो। वह इस प्रकार है–

कितने वर्षों से जो विचार चल रहा था, वह विनाशकारी युद्ध अब सिर पर आ गया है। हे युधिष्ठिर! कृष्ण की सहायता में फूलकर और भाइयों के सहित गर्ज कर तुमने संजय के द्वारा जो संदेश भेजवाया था, उसे संजय ने बढ़ा–चढ़ाकर कौरवों की सभा में कहा था, उसे अब कर दिखाने का समय आ गया है। तुम लोगों ने जो प्रतिज्ञाएं की हैं, उन्हें अब पूर्ण करो। हे युधिष्ठिर! तुम चंद्रवंशियों तथा कैकेयवंशियों के सहित बड़े धर्मात्मा बनते हो, फिर धर्म छोड़कर अधर्म में मन क्यों लगाते हो ? मैं विश्वास करता था कि तुमने सभी प्राणियों को अभय–दान दे रखा है, परंतु इस समय तुम निर्दय मनुष्य की तरह सब का विनाश देखना चाहते हो।

सुना जाता है कि कभी देवताओं ने प्रह्लाद के राज्य को छीन लिया था। तब प्रह्लाद ने एक गाथा कही थी–''जिसकी धर्ममयी ध्वजा ऊंचे तक फहराती है, परंतु जिसके द्वारा गुप्त रूप से पाप भी होते हैं, उसके कार्य को विडाल–व्रत कहा जाता है।'' विडाल तपस्वी का स्वांग दिखाकर गुप्त रूप से चूहों को खाये, वैसे तुम धर्म का दिखावा करके युद्ध के लिए तैयार बैठे हो। तुम्हारी बातें कुछ हैं और करनी कुछ और हैं। अतएव तुम्हारा वेदाध्ययन और शांत

स्वभाव दिखावा मात्र है। यदि तुम धर्मनिष्ठ हो, तो छल छोड़कर क्षत्रिय धर्म के अनुसार युद्ध करो। तुम्हारी माता वर्षों से दुख भोग रही है। उसके आंसू पोंछो और युद्ध में विजयी होकर सम्मान प्राप्त करो। तुमने केवल पांच गांव मांगे थे, मैंने उस मांग को इसलिए ठुकरा दिया कि पांडव इससे कुपित हों और युद्ध में सामने आयें। तुम्हारे लिए मैंने दुष्ट विदुर का त्याग कर दिया है। लाक्षागृह में अपने जलाये जाने की घटना की याद करो, अब मर्द बनो। तुमने कौरव-सभा में कृष्ण के द्वारा संदेश भेजा था कि मैं शांति और युद्ध दोनों के लिए तैयार हूं। अब उसका अवसर आ गया है। क्षत्रिय के लिए युद्ध से बड़ा लाभ कुछ नहीं है। तुमने भी क्षत्रिय कुल में जन्म लेकर बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की है। तुमने कृपाचार्य और द्रोणाचार्य से शस्त्र विद्या प्राप्त की और तुम बल में मेरे समान हो, फिर भी तुमने कृष्ण का आश्रय ले रखा है।

दुर्योधन ने कहा–उलूक! तुम कृष्ण से भी कहना, तुम पूरा तैयार होकर पांडवों की भलाई के लिए मेरे साथ युद्ध करो। तुमने मेरी सभा में जो मायावी रूप बनाया था उसे पुनः बनाकर मेरे ऊपर धावा बोल दो। इंद्रजाल, माया अथवा डरावनी कृत्या वीर क्षत्रिय को चकमा नहीं दे सकतीं। हम भी माया से आकाश में उड़ सकते हैं, पाताल में जा सकते हैं और इंद्रपुरी में पैठ सकते हैं। इतना ही नहीं, हम अपने शरीर में बहुत से रूप दिखा सकते हैं, परंतु इस जादूगरी और नाटकों के प्रदर्शन से क्षत्रिय को डराया नहीं जा सकता है। कृष्ण! तुमने जो कहा था कि मैं धृतराष्ट्र के सभी पुत्रों को मारकर पूरा राज्य पांडवों को दे दूंगा, वह संदेश संजय ने मुझे बता दिया था। तुमने यह भी कहा था कि कौरवो! जिन पांडवों का मैं सहायक हूं, उन्हीं से तुम वैर कर रहे हो। ठीक है, वह अवसर अब आ गया है। अब युद्ध में डट जाओ। हम तुम्हारी राह देखते हैं। अपनी वीरता का परिचय दो। शत्रुओं को शोक-मग्न कर देने वाला ही प्रशंसनीय है। कृष्ण! तुम्हारी महिमा अकस्मात बढ़ गयी है, परंतु मैं समझता हूं कि तुम्हारे प्रशंसक पुरुष की शक्ल में हिजड़े ही हैं। हे कृष्ण! मेरे जैसे राजा को तुम जैसे कंस के एक सेवक से युद्ध करना उचित नहीं है।

दुर्योधन ने कहा–उलूक! तुम उस भीम नाम के *'तूवरकम्'*–बिना मूंछ-दाड़ी के मनुष्य, बिना सींग के बैल, हिजड़े, बहुत खाने वाले पेटू, अज्ञानी और मूर्ख भीम से कहना कि जो तू विराट नगर में रसोइया बनकर वल्लभ नाम से रहा वह मेरा ही पुरुषार्थ था। तुमने कौरव-सभा में जो प्रतिज्ञा की थी कि मैं दुःशासन का रक्त पीऊंगा, यदि हिम्मत है तो उसे कर दिखाओ। तुम जो कहा करते हो कि मैं युद्ध में धृतराष्ट्र के पुत्रों को मार डालूंगा, वह अवसर अब आ

गया है। भीम! तुम निरे भोजनभट्ट हो, इसलिए अधिक खाने-पीने में पुरस्कार पाने योग्य हो। परंतु कहां पेटू होना और कहां युद्ध ? शक्ति हो तो मर्द बनकर युद्ध करो। तुमने जो कौरवसभा में उछल-कूद मचायी थी, वह व्यर्थ थी। याद रखो, युद्ध में तुम मेरे द्वारा मारे जाकर गदा को छाती में लगाये सदा के लिए सो जाओगे।

दुर्योधन ने उलूक से कहा–तुम नकुल से भी कहना कि वे अब मुझसे युद्ध करने के लिए तैयार हो जायं। उनसे कहना–हे नकुल! तुम युधिष्ठिर के प्रति अनुराग, मेरे प्रति बढ़े वैर तथा द्रौपदी के दुख की याद कर मुझसे युद्ध में भिड़ जाओ। उलूक! सहदेव से भी कहना कि अपने वनवास के दुख को याद कर हमसे युद्ध में भिड़ जायं।

उलूक! तुम विराट और द्रुपद से भी कहना कि इस संसार में सेवकों ने अपने स्वामियों की तथा स्वामियों ने अपने सेवकों की ठीक-ठीक पहचान नहीं की है। इसी प्रकार युधिष्ठिर श्रद्धा योग्य न होकर भी तुम दोनों ने उनको श्रद्धेय मानकर अपना राजा मान लिया है और उनकी तरफ से हमसे युद्ध करने आये हो। ठीक है, तुम लोग संगठित होकर पांडवों की भलाई के लिए मेरा वध करो। इसी प्रकार पांचाल राजकुमार धृष्टद्युम्न को भी मेरा संदेश कहना कि वे युद्ध में मुझसे भिड़ जायं। वस्तुतः तुम्हें आचार्य द्रोण सामने ही मिल जायंगे। आओ, गुरु की हत्या का अत्यंत दुष्कर पाप कर डालो। उलूक! तुम शिखंडी से कहना कि भीष्म तुम्हें स्त्री समझकर नहीं मारेंगे। अतएव निर्भय होकर युद्ध में अपनी कला दिखाओ। मैं तुम्हारे बल को देखूंगा।

ऐसा कहते-कहते दुर्योधन खिलखिलाकर हंस पड़ा और कहा कि कृष्ण के सामने ही अर्जुन से कहना–अर्जुन! या तुम हमें मारकर भूमि का शासन करो या हमारे हाथों परास्त होकर भूमि पर सो जाओ। अर्जुन! राज्य से निकाल दिये जाने, वनवास करने तथा द्रौपदी के अपमानजनित दुखों को याद कर अब भी मर्द बनो और युद्ध में हमसे भिड़ जाओ। क्षत्राणी जिसके लिए पुत्र पैदा करती है, वह समय आ गया है। तुम युद्ध में अपना फुर्तीलापन, बल और पुरुषार्थ दिखाकर अपने बढ़े हुए क्रोध को शांत कर लो। जिसे नाना प्रकार दुख दिया गया हो, दीर्घ समय के लिए राज्य से निकाल दिया गया हो और जिसे राज्य से वंचित होकर दीन भाव से जीवन बिताना पड़ा हो, ऐसे किस स्वाभिमानी का हृदय दो टूक न होगा ? जो तुमने बड़ी-बड़ी बातें कहीं हैं उन्हें करके दिखाओ। जो कर्म न करके केवल डींग हांकता है, उसे सज्जन लोग कायर मानते हैं। तुम्हारा राज्य शत्रुओं के हाथों में है उसका उद्धार करो। तुम जुए में पराजित हुए,

तुम्हारी पत्नी द्रौपदी को सभा में लाया गया। अपने को पुरुष मानने वाले किस मनुष्य को इससे अमर्ष नहीं होगा ? तुम बारह वर्ष राज्य से निर्वासित रहे, एक वर्ष अज्ञातवास में विराट नरेश के दास बनकर रहे। इन बातों तथा द्रौपदी के अपमानजनित दुखों की याद करके तो मर्द बनो और युद्ध के लिए हमसे भिड़ जाओ। हम लोग तुम्हें बारंबार कटु वचन कहते हैं। तुम अपना क्रोध तो दिखाओ। क्रोध ही पौरुष है। अब अस्त्र-शस्त्र बाहर आ गये हैं, कुरुक्षेत्र का कीचड़ सूख गया है। तुम्हारे घोड़े बलवान हैं। तुमने अपने सैनिकों का भी खूब भरण-पोषण किया है; अतएव कल सबेरे से कृष्ण के साथ आकर युद्ध करो। अभी तुम्हारा सामना भीष्म से नहीं पड़ा है, तभी तुम डींग हांकते हो। तुम दुर्जय कर्ण, शल्य, द्रोणाचार्य को युद्ध में परास्त किये बिना कैसे राज्य लेना चाहते हो ? द्रोणाचार्य ब्रह्मवेद और धनुर्वेद दोनों में पारगत हैं। ये युद्ध-भारवहन करने में समर्थ, अक्षोभ्य, सेना के बीच में विचरने वाले तथा युद्ध के मैदान से न भागने वाले हैं। इन्हें तुम जीतने की इच्छा करते हो जो तुम्हारा साहस मात्र है। वायु ने सुमेरु पर्वत को उखाड़ फेंका हो, यह हमारे सुनने में नहीं आया। तुमने जो डींग हांकी है, यदि वह सत्य हो जाय, तब तो मानो हवा ने हिमालय को उखाड़ फेंका है। स्वर्गलोक, पृथ्वी हो या कोई हो, द्रोणाचार्य के सामने युद्ध में आकर घर को नहीं लौट सकता। द्रोण और भीष्म जिसको मारना चाहेंगे, वह बच नहीं सकता।

उलूक! अर्जुन से कहना—जैसे देवता स्वर्ग की रक्षा करते हैं, वैसे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की दिशाओं के नरेश और कांबोज, शक, खश, शाल्व, मत्स्य, कुरु और मध्यदेश के सैनिक तथा म्लेच्छ, पुलिंद, द्रविड़, आंध्र और कांचीदेशीय योद्धा जिस सेना की रक्षा करते हैं, जो दुर्धर्ष और संगठित है, उस समुद्र तुल्य कौरव-राज्य की सेना को तुम कूपमंडूक समझ पाते हो ? शेखी मत बघारो, करके दिखाओ। मैं जानता हूं कि कृष्ण तुम्हारे सहायक हैं, तुम्हारे पास चार हाथ लंबा धनुष है, तुम बड़े योद्धा हो; यह जानकर भी मैं तुम्हारे राज्य को हड़प करके बैठा हूं।

हे अर्जुन! तुम लोग रोते-बिलखते रह गये, लेकिन मैंने तेरह वर्षों तक तुम्हारा राज्य भोगा। अब तुम्हारे भाइयों सहित तुम्हें मारकर राज्य भोगूंगा। हे गुलाम अर्जुन! जब तुम जुए के दावं में जीते लिए गये थे तब तुम्हारा गांडीव कहां था ? उस समय भीम का बल कहां चला गया था ? तुम वीरों का उद्धार द्रौपदी ने किया पिता श्री धृतराष्ट्र की कृपा से। मैंने जो उन दिनों तुम लोगों को हिजड़ा एवं नपुसंक कहा था वह ठीक ही निकला; क्योंकि अज्ञातवास के समय

विराटनगर में तुम्हें (अर्जुन को) अपने सिर पर स्त्रियों जैसी वेणी धारण करना पड़ा। इस प्रकार क्षत्रियों ने अपने विरोधी क्षत्रियों को सदा से दंड दिया है। इसीलिए तुम्हें विराट–नरेश के अंत:पुर में सिर पर वेणी बांधकर लड़कियों को नचाना पड़ा। कृष्ण के डर से मैं तुम्हारा राज्य नहीं लौटाऊंगा। तुम कृष्ण की सहायता लेकर आकर हमसे युद्ध करो। "हजारों कृष्ण और सैकड़ों अर्जुन हमारे बाण–प्रहार से भयभीत होकर दसों दिशाओं में भाग जायंगे।"

हे अर्जुन! तुम भीष्म से युद्ध करो अथवा सिर से पहाड़ फोड़ो अथवा मेरे सैनिक–समुद्र को दोनों बाहों से तैरकर पार करो।

हमारी सेना के महासागर में कृपाचार्य महा मत्स्य हैं, विविंशति सर्प हैं, बृहद्बल ज्वार हैं, भूरिश्रवा तिमिंगिल (मत्स्य) हैं, भीष्म असीम वेग हैं, द्रोणाचार्य ग्राह हैं, कर्ण और शल्य मत्स्य और भंवर हैं, कंबोजराज सुदक्षिण बड़वानल हैं। दु:शासन तीव्र प्रवाह हैं, शल और शल्य मत्स्य हैं, सुषेण और चित्रायुध नाग और मकर हैं, जयद्रथ पर्वत हैं, पुरुमित्र सैन्य–सागर की गंभीरता हैं, दुर्मर्षण जल हैं, शकुनि प्रपात हैं, सामरिक–साधन जल–प्रवाह है। यह सैन्य–सागर बृहत् और अक्षय है। जब तुम इस सागर में प्रवेश करोगे और अधिक श्रम के कारण जब तुम्हारी चेतना क्षीण होगी, तुम्हारे सब भाई मार दिये जायंगे, उस समय तुम अत्यंत संतापित होओगे। जैसे गंदे मन वाले का मन स्वर्ग की आशा छोड़ देता है, वैसे तुम्हारा मन राज्य के लिए निराश हो जायगा। अर्जुन! तुम शांत होकर बैठ जाओ। राज्य तुम्हारे लिए अत्यंत दुर्लभ है। जैसे तपस्याहीन मनुष्य स्वर्ग पाने का सपना देखे, वैसे तुमने राज्य पाने की दुराशा की है (अध्याय –)।

मीमांसा

उद्योग पर्व का यह एक सौ साठ ( )वां अध्याय एक सौ पचीस ( ) श्लोकों का है जिसमें दुर्योधन ने विष वमन किया है। दुर्योधन को हर समय अपनी विजय दिखायी देती है। उसकी सेना पांडवों से डेढ़ गुनी से अधिक है और राजे–महाराजे सहयोगी भी अधिक हैं; इसलिए उसे निर्भ्रांत रूप से अपनी विजय दिखती है। युधिष्ठिर ने केवल पांच गांव मांगा था। दुर्योधन ने सोचा होगा कि पांडवों को पांच गांव देकर इन्हें जिलाये रखना अच्छा नहीं है। इन्हें मारकर समाप्त कर दें तो निष्कंटक राज्य अपना होगा। इसलिए वह उलूक

. **वासुदेवसहस्रं वा फाल्गुनानां शतानि वा।**
आसाद्य माममोघेषुं द्रविष्यन्ति दिशो दश उद्योग पर्व, ,

से पांडवों के लिए ऐसा कटु, मर्मांतक और चिढ़ाने वाला संदेश देता है कि पांडव तुरंत युद्ध में लगें और हम उनको समाप्त कर निष्कंटक राज्य करें। अहंकारी अंधा होता है और मुख के बल गिरता है। कबीर साहेब ने दुर्योधन के लिए एक पंक्ति कही है–

दुर्योधन अभिमाने गयऊ। पांडव केर मर्म नहिं पयऊ

(बीजक, रमैनी)

. पांडवों का उलूक द्वारा दुर्योधन को संदेश

शकुनि-पुत्र उलूक पांडव-सभा में दुर्योधन का संदेश ज्यों-का-त्यों कहता है। इससे पांडवों को रोष आना ही था। भीम सांप की तरह फुफकारने लगे। श्रीकृष्ण ने मुस्कराते हुए उलूक से कहा–उलूक! पांडवों ने दुर्योधन का संदेश तुम्हारे द्वारा सुन लिया और उसके अर्थ को समझकर स्वीकार लिया। युद्ध के विषय में जैसा दुर्योधन का मत है, वैसा ही हो।

दुर्योधन ने युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, द्रुपद, विराट नरेश, शिखंडी आदि सबके लिए अलग-अलग कटु संदेश दिया था। उलूक ने उन सबको ज्यों-का-त्यों सुनाया। सभी ने दुर्योधन की बातें सुनकर रोष प्रकट किया। भीम, अर्जुन आदि सभी ने कौरवों को मार डालने की उलूक के सामने प्रतिज्ञा की। भीम ने कहा–यदि भीष्म को युद्ध में आगे कर दुर्योधन युद्ध करेगा तो हम भीष्म को भी मार देंगे। भीम और सहदेव ने उलूक को भी कटु वचन कहा। अर्जुन ने उन्हें सम्हालते हुए कहा–आप लोगों को उलूक को कठोर वचन नहीं कहना चाहिए। बेचारे दूत का क्या अपराध है ? वह कही हुई बात का अनुवाद मात्र कर देता है।

दुर्योधन के कटु संदेश से पांडव सहित उनके पक्ष के सभी राजे-महाराजे क्षुब्ध हो गये। युधिष्ठिर ने अनुनय-विनय करके उन सबको शांत किया और दुर्योधन को देने योग्य जो संदेश था उसे उलूक से इस प्रकार कहा–उलूक! कोई भी राजा शांत रहकर अपनी अवज्ञा सहन नहीं कर सकता। मैंने तुम्हारी बातें ध्यान से सुन ली हैं। अब मैं उसका उत्तर देता हूं। युधिष्ठिर भी क्रोध में थे, परंतु उन्होंने अपने को सम्हालकर उलूक से मुस्कुराते हुए कहा कि कुलांगार दुर्योधन से तुम इस प्रकार कहना–जो कभी भयभीत न होकर अपने बाहुबल से शत्रुओं से युद्ध करता है, वह क्षत्रिय है। तू क्षत्रिय होकर और हम लोगों को युद्ध के लिए बुलाकर रणभूमि में ऐसे लोगों को आगे करके न आना

जो हमारे माननीय वृद्ध, गुरुजन तथा स्नेहास्पद बालक हैं। तुम अपने और अपने सेवकों के बल पर हमसे युद्ध करो। तुम दूसरे के बल पर अपने को कैसे समर्थ मानते हो ?

श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को संदेश दिया कि तुम मेरी बात जानकर कि मैं केवल अर्जुन का सारथि रहूंगा, युद्ध नहीं करूंगा, मुझसे निर्भय हो गये हो। मैं चाहूं तो सारे राजाओं को मार सकता हूं, परंतु मैं दिल से यही चाहता हूं कि पूरे युद्ध में मुझे अस्त्र-शस्त्र न उठाना पड़े। मैं राजा युधिष्ठिर के अनुरोध से युद्धकाल में अर्जुन का रथ-वाहक अवश्य रहूंगा। तुम प्रातः अर्जुन का रथ अपने सामने देखोगे। तुम यह भी समझ लो कि भीम ने दुःशासन का रक्त पी लिया। तुम पांडवों को कटु शब्द कहते जा रहे हो, परंतु पांडव तुम्हें कुछ नहीं समझते हैं।

पांचों पांडव, विराट, द्रुपद, धृष्टद्युम्न तथा शिखंडी ने युद्ध की स्वीकृति का संदेश उलूक के सामने कहा जिससे वह दुर्योधन को बता सके। इसी दौरान युधिष्ठिर ने उलूक से कहा–"बेटा उलूक! तू दुर्योधन से मेरा यह संदेश कहना– सुयोधन! तुम अपने आचरण के अनुसार मेरा आचरण मत समझना। मैं सत्य-असत्य का भेद समझता हूं। मैं तो कीड़ों तथा चींटियों को भी दुख नहीं देना चाहता, फिर अपने भाई-बंधुओं का वध करना कैसे उचित मान सकता हूं। तात! इसीलिए पहले मैंने केवल पांच गांव मांगे थे कि हम उसमें अपना गुजर-बसर कर लेंगे और तुम्हारे ऊपर संकट न आये। परंतु तुम लोभ और तृष्णा में डूबे हो। इसीलिए तुम श्रीकृष्ण की बात भी नहीं मानते हो! अतएव अधिक क्या कहना! अब आकर युद्ध ही करो। मैंने तुम्हारा संदेश सुना और उसका अर्थ समझा। तुम्हारी जैसी इच्छा हो वैसा ही हो।"

युधिष्ठिर ने पुनः कहा– *"नाहं ज्ञातिवधं राजन् कामयेयं कथंचन"*–'हे राजन! मैं किसी प्रकार भी अपने जाति-भाइयों का वध करना नहीं चाहता।' किंतु यह सब दुर्योधन! तुम्हारे दोष से उपस्थित हुआ है।

इसके बाद युधिष्ठिर ने उलूक से कहा–बेटा उलूक! तेरी इच्छा हो तो शीघ्र चला जा, अथवा तेरा कल्याण हो, तू यहीं रह; क्योंकि हम भी तेरे भाई-बंधु हैं।

उलूक ने दुर्योधन के पास जाकर पांडवों का संदेश दिया। संदेश पाकर दुर्योधन ने दुःशासन, कर्ण और शकुनि से कहा कि राजाओं को आदेश दो, वे कल प्रातः सेना लेकर युद्ध क्षेत्र में डट जायं (अध्याय –)।

. पांडव तथा कौरव के रथी-महारथी, भीष्म-कर्ण के विवाद का शमन

युधिष्ठिर द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न को अपना प्रधान सेनानायक बनाकर प्रातः काल युद्ध के मैदान में जा डटे। धृष्टद्युम्न ने अर्जुन को कर्ण से, भीम को दुर्योधन से, धृष्टकेतु को शल्य से, उत्तमौजा को कृपाचार्य से, नकुल को अश्वत्थामा से, शैव्य को कृतवर्मा से, सात्यकि को सिंधनरेश जयद्रथ से और शिखंडी को भीष्म पितामह से युद्ध करने के लिए नियुक्त किया। स्वयं धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य को मारना चाहते ही थे, क्योंकि उन्होंने उनके पिता द्रुपद को पहले परास्त कर उनका गंगा से उत्तरी क्षेत्र का राज्य अपने अधिकार में कर लिया था।

कौरव-सेना तैयार हुई। उसके प्रधान सेनापति भीष्म पितामह हुए। भीष्म ने दुर्योधन को दिलासा दिया कि मैं और मेरी सेना पांडव-सेना का संहार करेंगे। मैं अपनी बड़ाई अपने मुंह से क्या करूं, मेरे सामने कोई नहीं टिक सकता।

भोजवंशी कृतवर्मा तथा मद्रराज शल्य वीर हैं, अतिरथी हैं। ये पांडव सेना को पछाड़ेंगे। शल्य अपने सगे भांजे नकुल-सहदेव को छोड़कर अन्य के साथ लड़ेंगे। इसके अतिरिक्त भूरिश्रवा, सिंधराज जयद्रथ, कांबोज-नरेश सुदक्षिण, माहिष्मती-नरेश नील, अवंती-नरेश विंद-अनुविंद, त्रिगर्तदेश के नरेश पांच भाई अतिरथी हैं, दंडधार कोसल-नरेश वृहद्बल, कृपाचार्य अतिरथी हैं ही, तुम्हारे मामा शकुनि, द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा और स्वयं द्रोणाचार्य कुशल युद्धविद हैं। कर्ण का पुत्र वृषसेन, मधुवंशी जलसंध, वाह्लीक, सत्यवान, राक्षसराज अलंबुस, प्राग्ज्योतिष-नरेश भगदत्त ये तुम्हारे रथी तथा अतिरथी हैं। गांधार देश के अचल और वृषक तुम्हारे सहायक हैं।

भीष्म ने आगे कहा-दुर्योधन! यह जो तुम्हारा सखा कर्ण है जो तुम्हें पांडवों के साथ सदैव युद्ध करने के लिए उत्साहित करता रहता है और युद्ध-स्थल में सदैव क्रूरता का परिचय देता है, बड़ा कटुभाषी, आत्मप्रशंसक और नीच है। यह कर्ण तुम्हारा मंत्री, नेता और बंधु बना है। यह अहंकारी तो है ही, तुम्हारा सहारा पाकर बहुत ऊंचे चढ़ गया है। यह कर्ण न रथी है और न अतिरथी है। यह दूसरे के प्रति सदैव घृणा रखने वाला है। यह अर्जुन से भिड़ने पर कदापि नहीं बच सकता।

उक्त बातें सुनकर द्रोणाचार्य ने इन बातों का समर्थन किया। उन्होंने कहा-आप जो कहते हैं वह बिलकुल ठीक है। कर्ण हर युद्ध में अहंकार बहुत दिखाता है, परंतु युद्ध से भागता हुआ ही दिखता है। कर्ण दयालु और प्रमादी है। इसलिए मेरी सम्मति से यह अर्धरथी ही है।

उक्त बातें सुनकर कर्ण क्रोध से आंखें फाड़कर देखने लगा और बोला-

पितामह! मैंने तुम्हारा कोई अपराध नहीं किया है, परंतु तुम आये दिन मुझे अपने वचन–बाण से बेधते रहते हो। मैं यह सब दुर्योधन के मुलाहिजा में पड़कर सह लेता हूं। परंतु तुम मुझे हर समय मूर्ख और कायर समझते हो। तुम जो मुझे अर्धरथी होने की बात कहते हो इससे जगत के लोग मुझे ऐसा ही समझने लगेंगे; क्योंकि लोगों को विश्वास है कि भीष्म झूठ नहीं बोलते। तुम कौरवों का सदैव अहित करते हो, परंतु दुर्योधन इस बात को नहीं समझ पाते हैं। तुम मेरे गुणों में सदैव दोष देखते हो और राजाओं के मन में मेरे लिए अविश्वास पैदा करते हो। यह युद्ध का अवसर है। समान श्रेणी के राजा उपस्थित हैं। तुम उसमें फूट डालने की चेष्टा कर रहे हो। बड़ी अवस्था हो जाने से, बाल पक जाने से, अधिक धन संग्रह कर लेने से और लंबा परिवार हो जाने से किसी क्षत्रिय को महारथी नहीं माना जाता है। क्षत्रिय बल से, ब्राह्मण वेदाध्ययन से, वैश्य धन से और शूद्र बड़ी आयु से श्रेष्ठ माने जाते हैं। तुम राग–द्वेष से भरे हो, इसलिए मनमाना रथी, अतिरथी और अर्धरथी का विभाग कर रहे हो।

कर्ण ने आगे कहा–महाराज दुर्योधन! तुम ठीक विचारकर देख लो। भीष्म के मन में दुर्भाव है। ये तुम्हारी बुराई करने वाले हैं। इन्हें अभी ही त्याग दो। सेना में एक बार फूट हो जाने पर उसमें मेल–मिलाप होना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में पीढ़ियों से चले आते सेवक भी हाथ से निकल जाते हैं। फिर जो अलग–अलग जगहों से आये हुए लोग एक कार्य को सिद्ध करने के लिए तैयार हैं, उनका हट जाना स्वाभाविक है। राजन! युद्ध के अवसर पर इन योद्धाओं के मन में संदेह हो रहा है। भीष्म हमारे तेज और उत्साह की हत्या कर रहे हैं। यहां गुप्त मंत्रणा में मेल–मिलाप की बात करना चाहिए, तो उलटे ये बूढ़े बाबा फूट डालने वाली बात कर रहे हैं। ये स्वयं अपने को बड़ा योद्धा मानते हैं और दूसरे को कुछ समझते ही नहीं हैं। शास्त्र कहते हैं कि बूढ़ों की बातें सुनना चाहिए; परंतु जो बहुत बूढ़े हो जाते हैं, उनकी बातें सुनने योग्य नहीं रहतीं; क्योंकि वे बालक की तरह हो जाते हैं। राजन! मैं इस युद्ध में अकेला ही पांडव–सेना का विनाश करूंगा, परंतु इसका सारा श्रेय भीष्म को मिल जायगा। तुमने भीष्म को ही सेनापति बनाया है। विजय का यश सेनापति को ही प्राप्त होता है। योद्धाओं को कोई श्रेय नहीं मिलता। अतएव राजन! मैं भीष्म के जीते जी किसी प्रकार युद्ध नहीं करूंगा। भीष्म के मारे जाने के बाद मैं घोर युद्ध करूंगा।

भीष्म ने कहा–मैं वर्षों से जिस बात को लेकर चिंतित था वह युद्ध का अवसर सिर पर आ गया है। दुर्योधन का यह बड़ा भारी भार मैंने अपने कंधों

पर ले रखा है। ऐसे समय में मुझे पारस्परिक भेद नहीं उत्पन्न करना चाहिए। इसी कारण तू अभी तक जीवित है। यदि ऐसी बात न होती तो मैं बूढ़ा होने पर भी तुझ बालक की हत्या कर देता। परशुराम मुझसे लड़े, परंतु वे मेरा बाल बांका नहीं कर पाये।

साधु पुरुष के मत से अपनी प्रशंसा नहीं करना चाहिए, परंतु तुम्हारे व्यवहार से पीड़ित होकर मैं अपनी प्रशंसा की बात करता हूं। काशिराज के यहां स्वयंवर में समस्त भूमंडल के नरेश इकट्ठे थे; मैंने सबको पछाड़कर काशी नरेश की पुत्रियों-अंबा, अंबिका, अंबालिका-तीनों का अपहरण कर लाया।

भीष्म ने आगे कहा-कर्ण! तू वैर का मूर्तिमान स्वरूप है। तू कुरु कुल का विनाशक है। अब तू रक्षा का प्रबंध कर और अपना बल दिखा। तू जिससे स्पर्द्धा रखता है, उस अर्जुन के सामने पड़ने पर बच नहीं पायेगा।

दुर्योधन ने भीष्म से कहा-गंगानंदन! आप मेरी ओर देखिए। इस समय महान कर्तव्य आ गया है। आप एकाग्र होकर मेरे कल्याण का काम कीजिए। आप और कर्ण दोनों ही मेरा महान कार्य करेंगे।

भीष्म ने कहा-मैं युद्ध में कृष्ण, अर्जुन तथा अन्य राजाओं में से जिनको सामने देखूंगा, उनको रोक दूंगा। परंतु शिखंडी यदि मुझे मारने भी आये तो भी मैं उसे नहीं मारूंगा। संसार जानता है कि मैंने अपने पिता शांतनु की इच्छापूर्ति के लिए मिले हुए उनके राज्य को ठुकराकर आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत पालन की प्रतिज्ञा कर ली थी। माता सत्यवती के ज्येष्ठ पुत्र चित्रांगद को कौरवों की राजगद्दी पर और बालक विचित्रवीर्य को युवराज के पद पर अभिषिक्त कर दिया था। राजाओं में अपने देवव्रत स्वरूप की ख्याति कराकर मैं कभी किसी स्त्री को, अथवा जो पहले स्त्री रहा हो उस पुरुष को भी नहीं मार सकता। तुमने सुना होगा कि शिखंडी पहले स्त्री रूप में ही जनमा था, पीछे वह पुरुष हो गया, अतएव मैं उससे युद्ध नहीं करूंगा। मैं अन्य राजाओं को जो मेरे सामने लड़ने आयेंगे, उन्हें मारूंगा; किन्तु कुंती के पुत्रों-पांडवों को नहीं मारूंगा (अध्याय -)।

मीमांसा

कर्ण के पांडवों के प्रति उत्तेजक वचन से तथा अन्य कुछ उसके ओछापन से भीष्म चिढ़ते थे, इसलिए वे प्रायः हर अवसर पर कर्ण को फटकारते थे। कर्ण की जो भी त्रुटि हो; भीष्म का उसके प्रति इस समय का भाषण उचित नहीं है; किंतु इसी जोश में वे काशिराज की लड़कियों के अपहरण करने की अपनी

वीरता का भी वर्णन कर डाले जो उनकी उद्दंडता थी। खैर, भीष्म शिखंडी को नहीं मारेंगे, उसकी कथा के पीछे तो भीष्म का वह पाप छिपा है जिससे उन्होंने अंबा का भी अपहरण किया था। इसको आप आगे पढ़ेंगे। एक बात यह कि कोई पहले स्त्री रूप में पैदा हुआ हो, और पीछे पुरुष हो जाय, यह असंभव है। बात इतनी है कि शिखंडी पहले जन्म की स्त्री है, यह कथा है।

. अंबा के तीन जन्मों का उपाख्यान

दुर्योधन ने भीष्म से पूछा कि शिखंडी आपको मारने आये तो भी आप उसे क्यों नहीं मारेंगे ? यह बात पूछने पर भीष्म ने अंबा का उपाख्यान बीस अध्यायों तथा करीब सात सौ श्लोकों में कहा है। कथाकार ने पूरी कथा भीष्म से ही कहलवायी है। इस कथा का सार स्वरूप इस प्रकार है–

राजा शांतनु केवट–कन्या मत्स्यगंधा में व्यामोहित थे। यह जानकर भीष्म ने अपने पिता का मन रखने के लिए केवट से मत्स्यगंधा को मांगा। केवट ने कहा कि मेरी पुत्री से पैदा हुआ बच्चा राजगद्दी पर बैठे। भीष्म ने स्वीकार किया और स्वयं आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। मत्स्यगंधा शांतनु की पत्नी बन गयी। उससे शांतनु द्वारा चित्रांगद और विचित्रवीर्य पैदा हुए। शांतनु के मरने पर चित्रांगद राजगद्दी पर बैठे परंतु वे थोड़े दिनों में मर गये। अतएव विचित्रवीर्य गद्दी पर बैठे। उनका विवाह करने के लिए भीष्म को चिंता हुई। इसी बीच काशीनरेश ने अपनी तीन पुत्रियों–अंबा, अंबिका और अंबालिका का एक ही साथ स्वयंवर–विवाह रचा। उसमें राजे–महाराजे इकट्ठे हुए। भीष्म ने काशी जाकर उन सब क्षत्रियों को परास्त कर तीनों लड़कियों का अपहरण कर लाया। हस्तिनापुर पहुंचने पर जब विचित्रवीर्य से उनका विवाह करना चाहा, तब बड़ी लड़की अंबा ने कहा कि मैंने अपने मन से राजा शाल्व को अपना पति चुन लिया है, अतएव आप इस पर ध्यान दें।

भीष्म ने साथियों से राय लेकर अंबा को ब्राह्मणों के संरक्षण में शाल्व के पास भेज दिया, परंतु शाल्व को अंबा के चरित्र पर संदेह हुआ, यद्यपि वह शुद्ध थी, परंतु शाल्व ने अंबा का प्रस्ताव ठुकरा दिया। उसके बहुत अनुनय–विनय करने पर भी शाल्व ने उसे नहीं स्वीकारा।

अंबा को ग्लानि हुई। वह अपने पिता काशीनरेश के यहां भी लज्जा–वश नहीं गयी। वह वन में तपस्वी ब्राह्मणों के पास तप करने चली गयी। वह

शैखावत्य के आश्रम पर पहुंची। ब्राह्मणों ने एक राजकन्या को अपने पास रखना उचित नहीं समझा। इतने में उन तपस्वी ब्राह्मणों के आश्रम पर राजऋषि होत्रवाहन आ गये, वे अंबा के नाना थे। परशुराम जी भी आ गये। राजर्षि होत्रवाहन ने अंबा का दुख उनसे बताया। परशुराम अंबा को लेकर हस्तिनापुर आये और उन्होंने भीष्म से कहा कि तुमने अंबा का अपहरण करके लाया है तो तुम उसे निभाओ। उसका भी विवाह विचित्रवीर्य से कर दो। भीष्म ने परशुराम के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। परशुराम ने कहा तो कुरुक्षेत्र में चलकर मुझसे युद्ध करो। दोनों में तनातनी हो गयी। अंततः कुरुक्षेत्र चलकर दोनों में घमासान युद्ध हुआ। फिर देवताओं की राय से नारद ने आकर दोनों में बीच-बचाव किया और युद्ध रुक गया। परशुराम ने हताश होकर अंबा से कहा कि बेटी! अब मेरे वश के बाहर है। तुम जो चाहो करो।

अंबा भीष्म के विनाश के लिए तपस्या में लग गयी। उसने यमुना के तट पर तथा अन्य तीर्थों में रहकर बारह वर्ष तक घोर तप किया। भीष्म की माता गंगा ने आकर अंबा को रोका कि तुम मेरे बेटे के विनाश के लिए तप न करो, परंतु अंबा ने नहीं माना। अंबा ने तपस्या करके वत्स देश में शरीर छोड़ा तो उसका आधा अंग वहां नदी बन गया और आधे अंग से ही उसने वत्सदेश में एक कन्या रूप में जन्म लिया। उसने दूसरे जन्म में भी घोर तप किया। महादेवजी ने आकर उसे आशीर्वाद दिया कि तू पांचाल नरेश राजा द्रुपद के यहां कन्या रूप में जन्म लेकर कुछ दिनों में पुरुष हो जायगी और शस्त्र-विद्या में निपुण होकर भीष्म की हत्या में कारण बनेगी।

महादेव जी की उक्त बातें सुनकर अंबा ने दूसरे जन्म के अपने शरीर को भी यमुना के किनारे अग्नि में जला दिया और राजा द्रुपद के यहां कन्या रूप में जन्म धारण किया। द्रुपद और उनकी पत्नी ही जानते थे कि बच्चा पुत्री है। उसको पुत्र रूप में प्रसिद्ध किया गया। उसका नाम शिखंडी रखा गया। वस्तुतः वह शिखंडिनी कहलाने योग्य थी। वह युवती हुई। राजा द्रुपद ने दशार्ण देश के राजा हिरण्यवर्मा की पुत्री से अपनी पुत्री शिखंडिनी को पुत्र सिद्ध कर विवाह किया। जब हिरण्यवर्मा की पुत्री द्रुपद के घर में आयी और शिखंडी से मिली तो उसे पता लगा कि यह तो शिखंडी नहीं, शिखंडिनी है, पुरुष नहीं स्त्री है। उसने अपने पिता को संदेश दिया। पिता हिरण्यवर्मा ने अपने आदमियों को भेजकर पता लगाया, तो द्रुपद का पुत्र पुत्र नहीं वस्तुतः पुत्री है, यह पता लगा। अंततः हिरण्यवर्मा ने अपने मित्र राजाओं को लेकर द्रुपद पर चढ़ाई करने की बात सोची। द्रुपद घबराये। शिखंडिनी वन में भाग गयी। वहां एक समृद्धिशाली यक्ष

मिला जिसका निवास राजभवन जैसा था। यक्ष का नाम स्थूणाकर्ण था। वह दयालु था। उसने इस शर्त पर शिखंडिनी को अपना पुरुषत्व देकर उसका स्त्रीत्व लेना स्वीकार किया कि भीष्म को मार देने के बाद तुम मेरे पुरुषत्व को लौटाकर अपना स्त्रीत्व ले लोगी। आपस में शर्त तय हो जाने पर यक्ष ने अपना पुरुषत्व देकर उसका स्त्रीत्व ले लिया। शिखंडी पुरुष बनकर हर्षित हुआ और घर आया। द्रुपद, रानी तथा बहू सब प्रसन्न हुए। हिरण्यवर्मा को भी जब पता लगा कि शिखंडी पुरुष ही है तब उसका द्रपुद के प्रति धोखाधड़ीजनित वैर शांत हो गया।

यक्षों के अधिपति कुबेर स्थूणाकर्ण यक्ष के यहां आये। किंतु स्त्री हो जाने से कुबेर के सामने आने में उसने लज्जा की। अन्य यक्षों से जब कुबेर को यह पता लगा तब उसने क्रोध कर कहा कि स्थूणाकर्ण को शीघ्र मेरे पास लाओ। मैं उसको दंड दूंगा। स्थूणाकर्ण लजाता हुआ कुबेर के सामने आया, तो कुबेर ने उसे डांटते हुए कहा कि तूने यक्ष–समुदाय की नाक कटा ली जो अपना पुरुषत्व अन्य को देकर उसका स्त्रीत्व स्वीकार लिया है। अब तू जीवनपर्यन्त स्त्री ही बना रहे और शिखंडी जीवनपर्यन्त पुरुष ही बना रहे। शिखंडी यह संदेश पाकर प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह जीवनपर्यन्त के लिए पुरुष हो गया। उसने द्रोणाचार्य से शस्त्र–विद्या सीखी और अंततः भीष्म की हत्या में कारण बना (अध्याय –)।

मीमांसा

करीब सात सौ श्लोकों में अंबा के तीन जन्मों की दुखद कहानी लेखक का कल्पना–विलास है। यह कोई नहीं जानता है कि शरीर छूटने के बाद कौन जीव कहां किस देह को धारण करता है। लेखक ने सिद्ध करना चाहा है कि भीष्म की उद्दंडता के परिणाम में अंबा को तीन जन्मों की दुखद यात्रा करना पड़ा। कोई स्त्री–पुरुष परस्पर लिंग–परिवर्तन कर लें, केवल कपोल–कल्पना है। कहानी का सार है कि भीष्म के पाप ने भीष्म की हत्या की।

दूसरा पक्ष है कि भीष्म को परशुराम से ऊपर उठाया गया है। क्योंकि उन्हें भागवत (कृष्णभक्त) बनाया गया है। वासुदेवशरण अग्रवाल लिखते हैं–

"यह कुछ उलझा हुआ उपाख्यान महाभारत के इस प्रसंग का आवश्यक अंग नहीं ज्ञात होता। एक तो आदि पर्व में अंबा की कथा का उचित स्थान था ही। दूसरे, यहां के इस कथा के सूत्र बहुत ही उखड़े और उलझे हुए हैं। शैखावत्य का आश्रम, वहां अकृतवर्ण राजा का अकस्मात आ जाना और सबसे

अधिक परशुराम का भी अकस्मात प्रकट हो जाना, ऐसे अभिप्राय हैं जो कथा की कृत्रिमता सूचित करते हैं। सर्वथा यह कहानी बाद में जोड़ी गयी प्रतीत होती है। भीष्म और जमदग्नि राम के इस घोर युद्ध की कल्पना भी जान-बूझकर की गयी है। हमें विदित है कि भार्गव राम का चरित महाभारत के कितने स्थलों पर अजेय योद्धा के रूप में रखा गया है, जिन्होंने इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियों से शून्य कर दिया था। वही भार्गव वीर राम अपने ही शिष्य गांगेय भीष्म से परास्त होते हैं और निस्तेज और निरुपाय होकर महेंद्र पर्वत पर चले जाते हैं। यह कथा किसने रची होगी ? इस पर विचार करते हुए हमारा ध्यान पांचरात्र भागवतों की ओर जाता है। गुप्त युग की भागवत मान्यता के अनुसार द्वादश महाभागवतों में भीष्म की गणना थी।''

भागवत (, , -) में ब्रह्मा, नारद, शंकर, सनत्कुमार, कपिल, मनु, प्रह्लाद, जनक, भीष्म, बलि तथा शुकदेव को भगवत भक्त कहा गया है। यह सब पांचरात्र भागवतों की खींचतान है। श्रीकृष्ण को इन सबके ऊपर बैठाने का असत प्रयास है।

. दोनों पक्षों के लड़ाकुओं के मनसूबे और युद्ध-क्षेत्र में आ डटना

दुर्योधन ने अपने वीरों से पूछा कि आप पांडव-सेना का कितने दिनों में विनाश कर सकते हैं ? भीष्म ने एक महीना में, द्रोणाचार्य ने भी एक महीना में, कृपाचार्य ने दो महीने में, अश्वत्थामा ने दस दिनों में और कर्ण ने पांच दिनों में पांडव-सेना को विनष्ट करने की बात कही।

कर्ण की बात सुनकर भीष्म ने ठहाका मारकर हंसते हुए कहा—जब तक श्रीकृष्ण के साथ अर्जुन तुम्हारे सामने नहीं पहुंचते हैं तब तक तुम बड़ी-बड़ी डींगे हांक लो। उनके सामने पड़ते ही तुम्हारी सिट्टीपिट्टी गुम हो जायगी।

युधिष्ठिर के गुप्तचरों ने कौरव दल के प्रमुख वीरों की उपर्युक्त बातें उन्हें बतायीं, तो युधिष्ठिर ने अपने वीरों से पूछा कि तुम लोग कौरव-सेना का कितने दिनों में विनाश कर सकते हो ? अर्जुन ने कहा—मैं श्रीकृष्ण की सहायता लेकर अकेला ही पलक मारते-मारते तीनों लोकों और भूत, भविष्य तथा

. **भारत सावित्री, पृष्ठ ।**

वर्तमान को नष्ट कर सकता हूं। मेरे पास दिव्य–अस्त्र है। उससे मैं तीनों लोकों को भस्म कर सकता हूं। इन अस्त्रों का पता कौरवों में किसी को नहीं है। परंतु साधारण युद्ध में मैं उसका प्रयोग नहीं करूंगा। हमारे सभी सेनापति भीष्म और द्रोणाचार्य का सामना कर सकते हैं। फिर हे राजन युधिष्ठिर! आप जिस पर क्रोध कर दें, वह बच नहीं सकता।

इसके बाद कौरव तथा पांडव की सेनाएं कुरुक्षेत्र में आ डटीं और उनकी हजारों छावनियां पड़ गयीं।

मीमांसा

कवि ने अर्जुन से अधिक अतिशयोक्ति करायी है। श्रीकृष्ण के सहयोग से वह पल मात्र में तीनों लोकों को भस्म कर देने की बात करता है, परंतु ब्रह्मास्त्र चलाने की बात नहीं करता है, जैसे आज सामान्य लड़ाइयों में एटम बम, अणु बम का प्रयोग नहीं होता।